Ex-Tra an Organisation

(Experimental Theatre in Realistic Attitude)

Annual Report 2015- 2016

(Hindi)

Working and correspondence Address:
C/O Ajeet Bahadur, 950/625, Mutthiganj, Allahabad, Uttar Pradesh-211003
Mo: +91 8127254051, +91 9452401478, +91 9695907532
E-mail: extraanorganization@yahoo.com , https://extranorg.wordpress.com

अनुक्रम

कार्यकारी सारांश -2015-16	3
संस्था परिचय	4
दृष्टिकोण	5
लक्ष्य एवं उद्देश्य	6
कार्यनीतियाँ	7
वार्षिक योजना –संक्षिप्त	8
2015-16 के उद्देश्य एवं समीक्षा	9-12
2015-16 में नाट्य निर्माण एवं प्रस्तुतियाँ	13 -14
विद्यालय में रंगमंच कार्यशाला	15-16
नाट्य निर्माण प्रस्तुति परक कार्यशाला	17-19
क्षमता वर्धन कार्यशाला	20
नाट्य निर्माण कार्यशाला	21-27
संयुक्त तत्वावधान में नाट्य प्रस्तुति	28-29
नाट्य निर्माण एवं प्रस्तुति	30-37
विद्यालय में रंगमंच कार्यशाला	38-42
एक्शन प्लान -2016-17	43-46
संस्था में वेतनिक कलाकर्मी	46

कार्यकारी सारांश -2015-16

बहुत ही हर्ष के साथ मैं आप सभी संस्था के सदयों, मित्रों एवं सहायता प्रदान करने वाले सहभागियों से वर्ष 2015-16 का कार्यकारी सारांश (एक्जिक्यूटिव समरी) साझा कर रहा हूँ। संस्था एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन (एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड) प्रति वर्ष के सामूहिक अनुभवों के साथ अपने विजन की दिशा में लगातार अग्रसर रहा है।

वर्ष 2015-16 के मुख्य उद्देश्यों जैसे कि अभिनय कला पर केन्द्रित विमर्श एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन विमर्शों एवं प्रस्तुति परक कार्यशालाओं में मुंशी प्रेमचंद कि कहानी ठाकुर का कुंवा से प्रेरित नाटक नीली नैया का निर्माण किया और संस्था के ही एक और नाट्य प्रस्तुति अंतरयात्रा का प्रदर्शन किया गया। जो की संस्था में कलाकर्मियों द्वारा अभिनय पद्धतियों (बर्टोल्ट ब्रेख्त : अलगाव पद्धति एवं अंतोनिन आर्तो : क्रूरता का रंगमंच पद्धति) पर एक अनुसंधान की परिणति है । इसके साथ ही साथ संस्था ने पश्चिम बंगाल की संस्था शिल्पोभूमि एवं इलाहाबाद की संस्था प्रतिबिब के साथ संयुक्त तत्वावधान में भी दो प्रस्तुतियों का प्रदर्शन इलाहाबाद के उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र में किया गया। यह प्रस्तुतियाँ अभिनय कला पर दर्शकों इवान नाट्य आलोचकों के सामने वर्तमान सदी के रंग अभिनय और रंग अभिनेताओं की अस्मिताओं एवं चुनौतियों को भी उजागर कर इन पर विमर्श के लिए प्रेरित करता है। संस्था के नाट्य प्रस्तुतियों के अवसर पर भारतेन्दु नाट्य अकादमी के निर्देशक एवं सह निर्देशक की उपस्थिती संस्था के द्वारा किए जा रहे रंग अभिनय पर विमर्श में काफी सहायक रही

संस्था अपने अनुभवों के साथ एवं आधार पर रंग अभिनेता और रंग अभिनय के सौन्दर्यशास्त्र को सामूहिक तौर पर निर्माण करने के दिशा में बढ़ रहा है । जो की अभिनेता और अभिनय एवं दर्शकों के मध्य सजीव अन्तःक्रिया घटा सके और दर्शकों को नाट्य निर्माणिक प्रक्रिया से शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तौर पर जोड़ कर वर्तमान जीवनगत मुद्दों पर सामूहिक विमर्श और निष्कर्ष को तराशा जा सके। इन वैचारिक क्रियागत सार के साथ संस्था इस वर्ष एक गहन अनुभव को इकट्ठा करने में काफी हद तक सफल रही है।

संस्था इस वर्ष से अपने दर्शकों एवं स्टेकहोल्डर्स के साथ दस्तावेजों को गुणवततापूर्वक साझा करने लिए संस्था का वैबसाइट एवं पोर्टल साझा करने जा रही है। इससे संस्था के कार्यों और क्रियाओं को इंटरनेट के माध्यम से साझा करने में काफी सरलता होने का आशय लिया जा रहा।

इस वर्ष संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार से पाँच कलाकर्मियों एवं एक गुरु के बाबत बारह माह की सैलरी ग्रांट की सहायत प्राप्त हो पायी है । जिससे संस्था के कलाकर्मियों ने संस्था में और भी अधिक या कहे पूरे तौर पर समय देना आरंभ कर दिया है । इससे संस्था अपने उद्देश्यों के पथ पर समूहिक यात्रा करने में सफल हो रही है।

अतः आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि इस वर्ष के इस प्रगति प्रतिवेदन पर अगर आप कि तरफ से कोई भी सुझाव या विचार हों तो संस्था तक अवश्य पहुंचाएँ। जिससे संस्था अपने भावी उद्देश्यों को साझे रूप से साझा सहमति से प्राप्त करने में सफल हो सके।

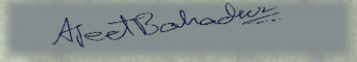

अजीत बहादुर

संस्था अध्यक्ष

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन

(एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड)

परिचय :

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन (एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड) की नींव कई वर्षों के सघन चर्चा एवं विचारों के संघर्षों से गुज़रते हुए सन 2002 के 23 जनवरी को कलकत्ता में रखी गयी । संस्था की नींव कि सिचाई में कला एवं रंगमंच कार्यकर्ता, रिक्शा चालक रंगकर्मी साथी –इलाहाबाद, बूट मरम्मत कर्ता रंगकर्मी साथी-कोलकाता एवं रवीद्र भारती विश्वविध्यालय –कोलकाता और भारतेन्दु नाट्य एकेडमी-लखनऊ में अध्ययनरत छात्र रहे हैं । संस्था में शुरू से ही विविध प्रतिभाओं का स्थान रहा है। एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन (एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड) अपने विज़न *"संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज के निर्माण में रंगमंच कला क्रिया का विस्तार"* की संकल्पना के साथ वचनबद्ध रहा है ।

संस्था अपने विज़न की ओर बढने और इसकी प्राप्ति के लिए कला और संस्कृतियों की विविधिता से आभूषित भारत के पारंपरिक कला और यहाँ की संस्कृतियों के आधार पर रंगमंच के नए सौंदर्यशात्रीय प्रतिमान रचने में इसके शोध और खोज में लगातार व्यस्त रहता आ रहा है । इस रंगमंचीय प्रतिमान को समाज में स्थापित करने के लिए हम निरंतर हमारी प्रक्रियामयी प्रस्तुतियों से दर्शक और अभिनेता के बीच की दूरियों को लगातार कम करने की कोशिश में हैं । क्योंकि हमें ऐसा लगता है कि किसी नाटक का उत्पाद मात्र से नहीं बल्कि नाटक और रंगमंच के अंदर व्याप्त जीवन मुखी शाश्वत प्रक्रियाएँ हमें हमारे विज़न *"संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज के निर्माण में रंगमंच कला क्रिया का विस्तार"* तक पहुंचा सकेंगी ।

संस्था के मुख्य नाटक जिनकी प्रस्तुति अंतर्राष्ट्रीय महोत्सवों में हुई हैं, जैसे सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा लिखित 'हवालात' का मंचन राष्ट्रीय नाट्य विध्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित भारत रंग महोत्सव -2009, अंतोन चेखोव द्वारा लिखित कहानी 'टेढ़ा दर्पण' का मंचन राष्ट्रीय नाट्य विध्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित भारत रंग महोत्सव -2010 तथा नेशनल थिएटर फेस्टिवल-केरला -2010 में, एवं धर्मवीर भारती द्वारा लिखित उपन्यास 'सूरज का सातवाँ घोडा' का मंचन राष्ट्रीय नाट्य विध्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित भारत रंग महोत्सव -2011 दिल्ली एवं चेन्नई भारत रंग महोत्सव में हुए हैं । इसके साथ ही साथ संस्था देश के अलग-अलग हिस्सों राजस्थान, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश में रंगमंच की टोलियों का निर्माण और कार्य भी कर रही है । संस्था राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने हेतु नई दिल्ली से सन् 2007 के 27 दिसम्बर को एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन' के नाम से रजिस्टर किया गया है ।

दृष्टिकोण :

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन का यह मानना है कि भारत की पारंपरिक रंगमंच एवं लोक शैलियों का शोध कर नए अभिनय शैलियों और नाट्य शैलियों के साथ नए सौदर्यशास्त्रीय प्रक्रियाओं का निर्माण करना । यह सौदर्य शास्त्रीय प्रतिमान हमारे विज़न की प्राप्ति का निर्मित होता मार्ग है । इस मार्ग के निर्माण के लिए राष्ट्रीय और इच्छुक अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और रंगकर्मियों तक हमें अपने प्रक्रिया रंगमंच विधियों के साथ पहुँचना और इनका प्रस्तुति परक प्रसार । इस प्रसार के लिए हम अलग –अलग राज्यों के नाट्य एवं कला दलों तथा पारंपरिक संगीत टोलियों तक पहुँच रहे हैं जैसे : बीकानेर, राजस्थान में जन जागृति संस्था जो की एक नाट्य संस्था है , पश्चिम बंगाल के हुगली में आर्ट फ़ाउंडेशन ऑफ द एरा एवं जयपुर के दृश्य कला समूह अरविद स्टुडियो,सोडाला तथा बीकानेर के सुफी संगीत गायकों के साथ मिल कर हम अपने विज़न को साझा कर रहे हैं, ताकि हम सब के इस विज़न *"संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज के निर्माण में रंगमंच कला क्रिया का विस्तार"* के गठन की यात्रा में कला अपने कार्यवाहकों के साथ क्रियात्मक आएं ।

लक्ष्य

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने विज़न *"संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज के निर्माण में रंगमंच कला क्रिया का विस्तार"* कि प्राप्ति के लिए निम्न लक्ष्यों की ओर बढ़ रही है जो की इस प्रकार हैं । विज़न के अनुरूप एक ऐसा रूप विषयक (मॉडल) सामुदायिक स्तर पर "बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम" का निर्माण आगामी 2020 तक करना चाहती है । संवेदनशील ,लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज के निरंतर निर्माण के लिए जहां रंगमंच कला में निरंतर प्रयोग और उनका स्थापन होता रहेगा। इसके लिए भावी वर्तमान और आगंतुक पीढ़ियों के साथ इस प्रक्रिया का स्थापन हमें अतिआवश्यक महसुस होता रहा है । लक्ष्यों के कुछ निम्न बिन्दु इस प्रकार हैं:

- सामुदायिक स्तर पर "बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम" का निर्माण के लिए बंजर भू-खंड खोजना और स्थानीय अथवा राज्य स्तरीय प्रशासनों से चर्चा करना ।
- सामुदायिक स्तर पर "बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम" का निर्माण करना ।
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहूद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम के निर्माण के लिए चर्चाएँ चलाना ।
- "बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम" मॉडल के स्थापना के साथ ही साथ इसका सामुदायिक स्तर पर अन्य राज्यों में विस्तार करना ।

उद्देश्य

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने विज़न तक पहुँचने के लिए जो भी लक्ष्य रूपी मार्ग तैयार कर रहा है । उसके लिए रंगमंच कला के क्षेत्र में निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्यरत है ।

- स्थानीय एवं अन्य राज्यीय कला एवं रंगकर्मियों तक पहुँचना ।
- अंतर्राष्ट्रीय रंगकर्मियों से निरंतर संवाद एवं अपने रंग-विधियों एवं विचारों पर साझा समझ बनाना ।
- नाट्य प्रक्रिया कार्यशालाओं के तहत स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर रंगकर्मियों का निर्माण करना ।
- ज़्यादा से ज़्यादा दर्शकों तक पहुँचना और उनकी वैचारिक भागीदारी सुनिश्चित करना ।

कार्यनीतियां :

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने विज़न के लिए जो भी लक्ष्य रूपी मार्ग तैयार कर रहा है। उसके लिए रगमंच के क्षेत्र में उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निम्न कार्यनीतियों पर कार्यरत है :

- संस्था के नाट्य प्रक्रिया प्रस्तुतियों का निर्माण उभर रहे निर्देशकों के द्वारा
- नाट्य उत्सवों में भागीदारी
- नाट्य उत्सवों का आयोजन
- नाट्य प्रक्रिया कार्यशालाएँ
- दर्शक-अभिनेता संवाद
- रंगमंच एवं समाज पर स्थानीय वाकपीठों का आयोजन
- 'रंगमंच कला की अस्मिताएँ', 'रंग अभिनय और रंग अभिनेता के समकालीन परिदृश्य' मुद्दे पर चरणवार सम्मेलन

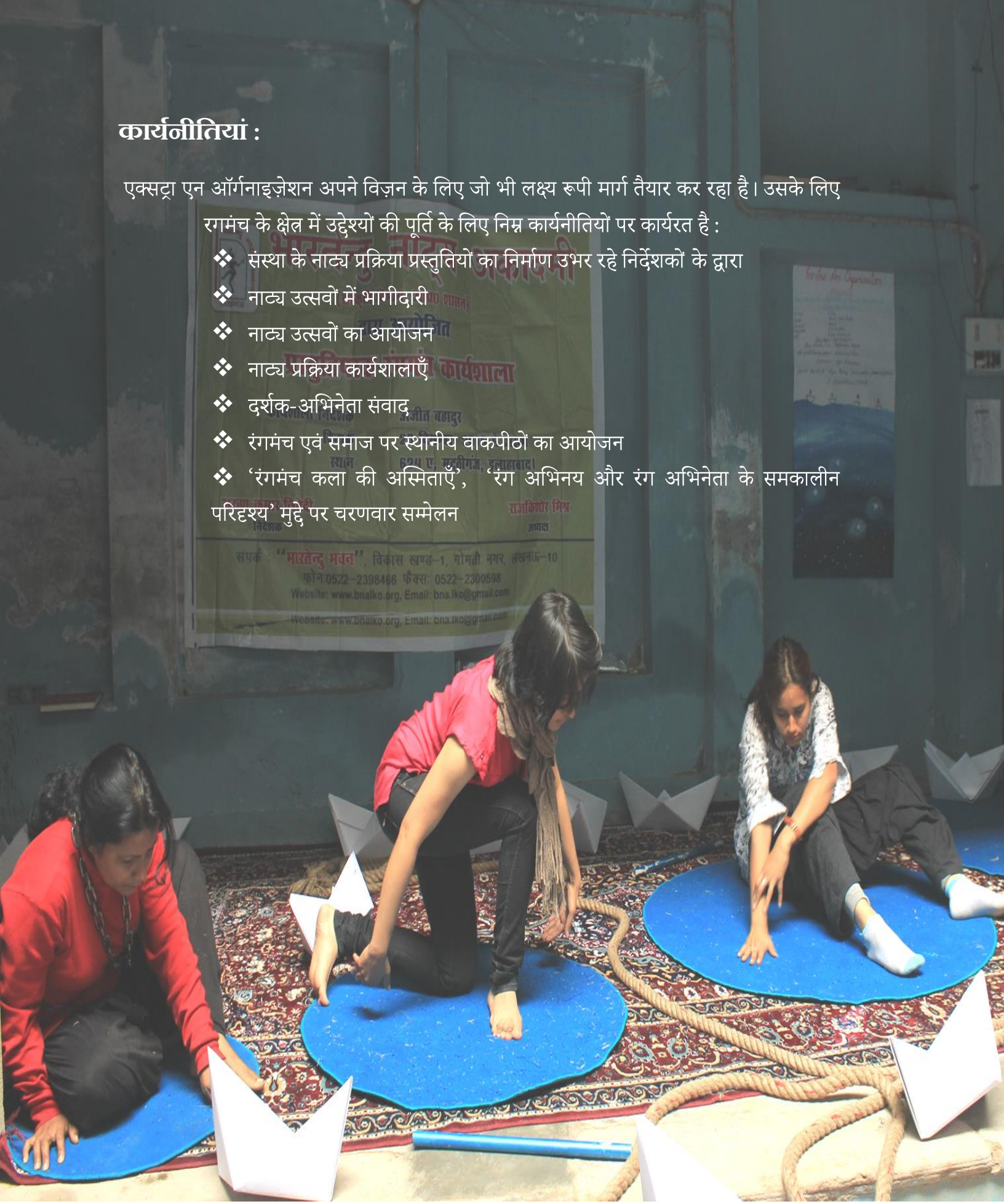

उद्देश्य 2015-16 :

संस्था के क्रियान्वयन मंचों के माध्यम से भारतीय एवं अन्य रंगमंच कलाओं तथा रंग अभिनय के समकालीन परिस्थितियों पर विमर्श करना एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में रंग अभिनय कला का सौंदर्शस्त्रीय प्रतिमानों के निर्माण का अवसर बनाना ।

क्रम	माह	योजना	उद्देश्य
1	अप्रैल – जून	प्रस्तुति परक कार्यशाला : 'आई एंड मी'	संस्था के अभिनेताओं एवं सहयोगी अभिनेताओं के साथ संस्था के द्वारा अनुसंधान किए जा रहे अभिनय शैली 'सिबोलिक ईंट्राइक्शन' पर साझा समझ बनाना एवं प्रस्तुति प्रक्रिया में इस शैली का अनुभव प्राप्त करना।
2	अगस्त – सितम्बर	प्रस्तुति परक कार्यशाला : 'दर्शन'	संस्था के अभिनेताओं के साथ संस्था के द्वारा अनुसंधान किए जा रहे अभिनय शैली 'सिबोलिक ईंट्राइक्शन' पर साझा समझ बनाना एवं प्रस्तुति प्रक्रिया में इस शैली का अनुभव प्राप्त करना।
3	ओक्टोबर- नवम्बर	नाट्य उत्सव एवं संगोष्ठी : 'क्रफ्टिग टेकनिक्स एंड मेथड्स ऑफ एक्टिग आर्ट्स'	'अभिनय कला के समकालीन अभ्यास, चुनौतियाँ एवं अस्मिताएँ' पर नाट्य उत्सव के दौरान संगोष्ठी आमंत्रित नाट्य प्रयोग व अभिनय प्रयोग/ अभ्यास कर्ताओं के साथ एवं मध्य उपरोक्त थीम पर विमर्श करना और आगंतुक रंगकर्मियों को इन विमर्शों से जोड़ने का अवसर तराशना।
4	दिसम्बर –फरवरी	प्रस्तुति परक अवासीय कार्यशाला : 'नदी प्यासी' / नीली नैया	संस्था के अभिनेताओं एवं कलाकर्मियों के साथ विगत नौ माह हुए कार्य के आधार पर इस समूह का आगे की दिशा में क्षमता वर्धन करना। एवं नाट्य प्रस्तुति का निर्माण करना संस्था द्वारा विकसित किए जा रहे अभिनय शैली में।
5	मार्च	संस्था का वार्षिक बैठक : रिवियू एंड प्लानिग	प्रति वर्ष की भांति संस्था अनुभवों के आधार पर रिवियू और प्लानिग करेगी। एवं इस वर्ष वेबसाइट के माध्यम से आलेख/विमर्श पत्र दर्शकों से साझा करने की योजना का निर्माण करेगी।

क्रम	योजना	उद्देश्य	अंशदान के व्यापक संकेतक	संस्थागत आत्म विश्लेषण
1	प्रस्तुति परक कार्यशाला : 'आई एंड मी'	संस्था के अभिनेताओं एवं सहयोगी अभिनेताओं के साथ संस्था के द्वारा अनुसंधान किए जा रहे अभिनय शैली 'सिबोलिक ईंट्राइक्शन' पर साझा समझ बनाना एवं प्रस्तुति प्रक्रिया में इस शैली का अनुभव प्राप्त करना।	❖ संस्था के कलाकर्मियों द्वारा नाट्य प्रस्तुति प्रक्रिया में दर्शकों से नाट्य संवाद करना ❖ रंगमंच और समाज के अन्तः क्रियाओं पर आलेख साझा करना	अभिनेताओं द्वारा अर्जित अनुभवों को दर्शकों के साथ नाट्य निर्माण प्रक्रिया के दौरान साझा करने के अवसर और भी उपलब्ध होना है।
2	प्रस्तुति परक कार्यशाला : 'दर्शन'	संस्था के अभिनेताओं के साथ संस्था के द्वारा अनुसंधान किए जा रहे अभिनय शैली 'सिबोलिक ईंट्राइक्शन' पर साझा समझ बनाना एवं प्रस्तुति प्रक्रिया में इस शैली का अनुभव प्राप्त करना।	इस कार्यशाला को और भी वृहत बनाने के लिए संस्था ने कोलकाता के नाट्य समूह शिल्पभूमि एवं इलाहाबाद के नाट्य समूह प्रतिबिब के साथ तवावधानिक भूमिका लेकर दो और नाट्य प्रस्तुतियों का प्रदर्शन कर पाया है। जिससे संस्था के नाट्य निरमानिक प्रक्रियाओं को और भी अधिक जाँचने –परखने एवं इसकी पड़ताल करने का अवसर मिला। एवं इसके अलगे चरण 2016-17 में इस पर आगे का कार्य होना है।	
3	नाट्य उत्सव एवं संगोष्ठी : 'क्रफ्टिग टेकनिक्स एंड मेथड्स ऑफ एक्टिग आर्ट्स'	'अभिनय कला के समकालीन अभ्यास, चुनौतियाँ एवं अस्मिताएँ' पर नाट्य उत्सव के दौरान संगोष्ठी आमंत्रित नाट्य प्रयोग व अभिनय प्रयोग/ अभ्यास कर्ताओं के साथ एवं मध्य उपरोक्त थीम पर विमर्श करना और आगंतुक रंगकर्मियों को इन विमर्शों से जोड़ने का अवसर तराशना।	समय पर सहायक राशि उपलब्ध न हो पाने पर यह नाट्य उत्सव संस्था अपने स्तर पर 1 से 4 माह अप्रैल -2016 के बीकानेर शहर में टाउन हाल में करने जा रही है । इसका अनुभव प्रतिवेदन 2016-17 में साझा कर पाएगी।	

4	प्रस्तुति परक अवासीय कार्यशाला : 'नदी प्यासी' / नीली नैया	संस्था के अभिनेताओं एवं कलाकर्मियों के साथ विगत नौ माह हुए कार्य के आधार पर इस समूह का आगे की दिशा में क्षमता वर्धन करना। एवं नाट्य प्रस्तुति का निर्माण करना संस्था द्वारा विकसित किए जा रहे अभिनय शैली में।	इस कार्यशाला के दौरान संस्था और सहभागी अभिनेताओं ने दो प्रस्तुतियों में हिस्सेदारी की है 1- नीली नैया एवं दूसरा अंतरयात्रा। इस कार्यशाला में अभिनेताओं ने स्वयं से नाट्य संवाद एवं दृश्यों पर कार्य किया। जो संस्था के कार्यों को गुणवत्ता प्रदान करती है।	कार्यशाला में रंग अभिनय सिद्धांतों/परम्पराओं (भरत नाट्यशास्त्र के अनुसार) पर विविध शैक्षणिक अवसर बनाना।
5	संस्था का वार्षिक बैठक : रिवियू एंड प्लानिग	प्रति वर्ष की भांति संस्था अनुभवों के आधार पर रिवियू और प्लानिग करेगी। एवं इस वर्ष वेबसाइट के माध्यम से आलेख/विमर्श पत्र दर्शकों से साझा करने की योजना का निर्माण करेगी।	प्रत्येक वर्ष की भांति संस्था बैठक माह मार्च में करती रही है। परंतु इस वर्ष फरवरी माह के 27 तारीख को करना रहा ताकि संस्था संस्कृति मंत्रालय भरत सरकार को 15 मार्च के भीतर प्रगति प्रतिवेदन साझा कर सके।	
6	विद्यालयों में रंगकर्म	संस्था समय समय पर विद्यालयों में कार्य करती रही है। परंतु इस वर्ष संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार से सूचना मिलने के पश्चात इस कार्य को संस्था के वैतनिक अभिनेताओं ने भी अपने-अपने स्तर पर कराया किया। इससे आने वाले वर्ष में संस्था को विद्यालयों में भी एक स्थान मिला है। इस पर संस्था गंभीर रूप से इसका कार्य मॉड्यूल बना रही है ताकि बच्चों के साथ ही साथ शिक्षकों के साथ भी कार्य किया जा सके।	इस वर्ष संस्था कुल तीन विद्यालयों में कार्य कर पायी है । संस्था के वैतनिक एवं स्वैच्छिक अभिनेताओं के साथ मिलकर जो इस प्रकार हैं: 1- राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय-अनवरनगर, टोंक, राजस्थान : 27/07/2015 से 30/07/15 तक शिक्षकों के साथ शिक्षा में नाट्यकला के उपयोग एवं इसकी प्रकटी पर कार्यशाला किया गया। यह कार्यशाला भाषा पठन – पठन और सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में नाटक कैसे उपयोगी हो सकता है पर आधारित रहा है। इस कार्यशाला को संस्था सदस्य राजकुमार एवं रायना ने फेसिलिटेट किया। 2- सनराइज़ पब्लिक स्कूल-साहिबाबाद, गाजियाबाद – उत्तर प्रदेश : दिनांक 01/12/2015 से 07/12/15 तक इस विद्यालय में रंगमंच कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का थीम बच्चों के संवेग एवं मल्टिपल इंटेलिजेंट के विकास पर आधारित रहा है।	

			3- पूर्व माध्यमिक विद्यालय-मुट्ठिगंज, इलाहाबाद-उत्तर प्रदेश : दिनांक 2/2/2016 को इस विद्यालय में कार्यशाला का श्रूक बच्चों के साथ आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में रंगमंचीय खेलों एवं गतिविध्यि ओन के माध्यम से विद्यालय, घर एवं आस-पड़ोस को स्वच रखने तथा पानी का व्यवस्थित उपयोग करने की थीम को साझा किया गया।

चुनौतियाँ :

संस्था इस वर्ष के योजना के अनुसार क्रियान्वयन को सफल बनाने में जिन चुनौतियों का महसूस कर पायी...

1. संस्था के पाँच अभिनेताओं के अलावा स्वैच्छिक अभिनेताओं का अधिक समय न मिल पाना जिससे नाट्य प्रक्रियाओं का समय बढ़ा।
2. संस्था में इस वर्ष कंसलटेंट निर्देशकों को आमंत्रित नहीं कर पाना ।
3. सहायक राशि का एकत्र ना होने से योजना अनुसार नाट्य उत्सव एवं संगोष्ठी का आयोजन ना हो पाना ।
4. अभिनेताओं एवं अन्य सदस्यों का अभिनय संबन्धित शैक्षणिक एक्सपोजर का टूर ना बन पाना।
5. संस्था में फूल टाइम कलाकर्मियों का की संख्या का कम होना।

2015-16 में जो बेहतर क्रियान्वयन रहा...

1. सिबोलीक इंट्राकशन पर हमारी समझ और इसका रंग अभिनय में इंटीग्रेशन।
2. संस्था के अभिनेताओं की सामाजिक विकास के विविध व्यावहारिक एवं निर्माणिक विचारधाराओं पर व्यापक समझा का बन पाना ।
3. संस्था के इलाहाबाद के स्वयं के रंग स्टुडियो का सौंदर्यीकरण आरंभ हो जानाएवं यहाँ नाट्य उपस्थापनाओं का भी आरंभ होना ।
4. नाटक नीली नैया, अंतरयात्रा का निर्माण एवं चार अलग-अलग स्थानो एवं राज्यों में प्रस्तुति साझा हो पाना

लार्नींग्स :

वर्ष 2015-16 में निम्न लर्निंग्स बनी है...

1. संस्था के कार्यों का विस्तृत दस्तावेज़ बनाना और इसको संस्था के स्थायी दर्शकों के साथ साझा करना। ताकि रंगसमूह के विचार एवमा गतिविधियों से दर्शकों को लगातार अपडेट एवं क्रियनवायन के साथ जोड़ा जा सके।
2. संस्था नियमित रूप से नाट्य उपस्थापनाओं के इतर भी दर्शक संवाद मंचो को और भी अधिक क्रियाशील बनाएँ ।
3. विद्यालयों में होने वाले कार्यों को स्कूल समूह से मिलकर विद्यालय के कलेंडर में स्थान दिलवाना ।
4. स्कूल समूह के साथ ही साथ शिक्षक समूहों के साथ भी रंग कार्य करना जिससे शिक्षक इस विधा का अपने कार्य में उपयोग कर सकें।

वर्ष 2015-16 में नाट्य निर्माण एवं प्रस्तुतियाँ

अप्रैल से जून

अभिनय सिद्धांत निर्माण प्रक्रिया में नाट्य प्रस्तुति " :आई अँड मी"

इन तीन माह मे संस्था के सदस्य मेघराज एवं चौथमल के साथ सिबोलीक इंट्रकशन जो की एक सामाजिक विकास का सिद्धांत है । इस सिद्धांत को अमेरिका के जॉर्ज हर्बर्ट मिड ने रचा था । इस सिद्धांत के आधार पर संस्था कैरेक्टर एक्स्प्रेशन अभिनय प्रक्रिया के द्वितीय चरण पर कार्य कर रहा है। इसके पहले चरण कैरेक्टर एक्स्प्रेशन को इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बेंगलोर ने 2010 में सह्यता प्रदान की थी एवं नाटक सूरज का सातवाँ घोड़ा का निर्माण किया गया था।

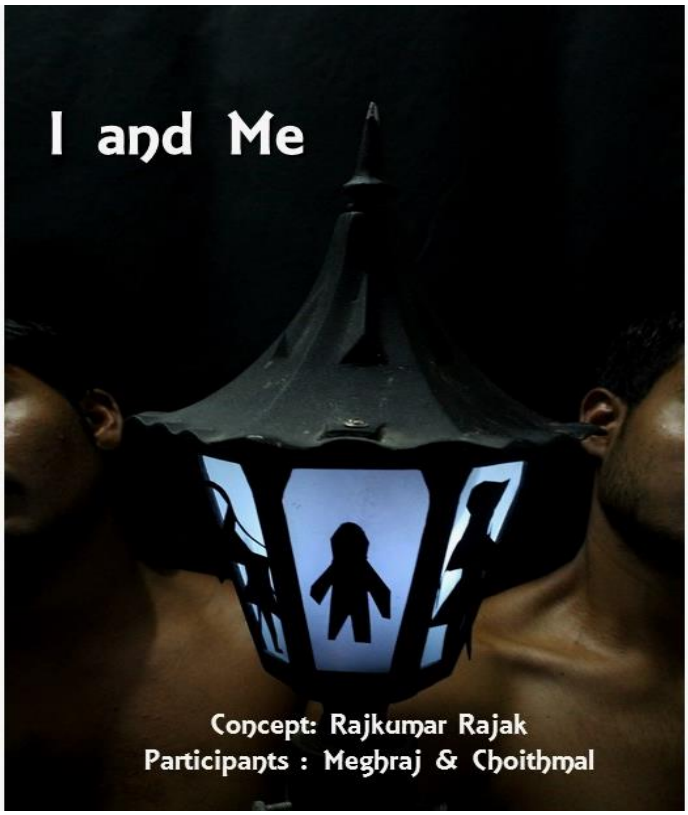

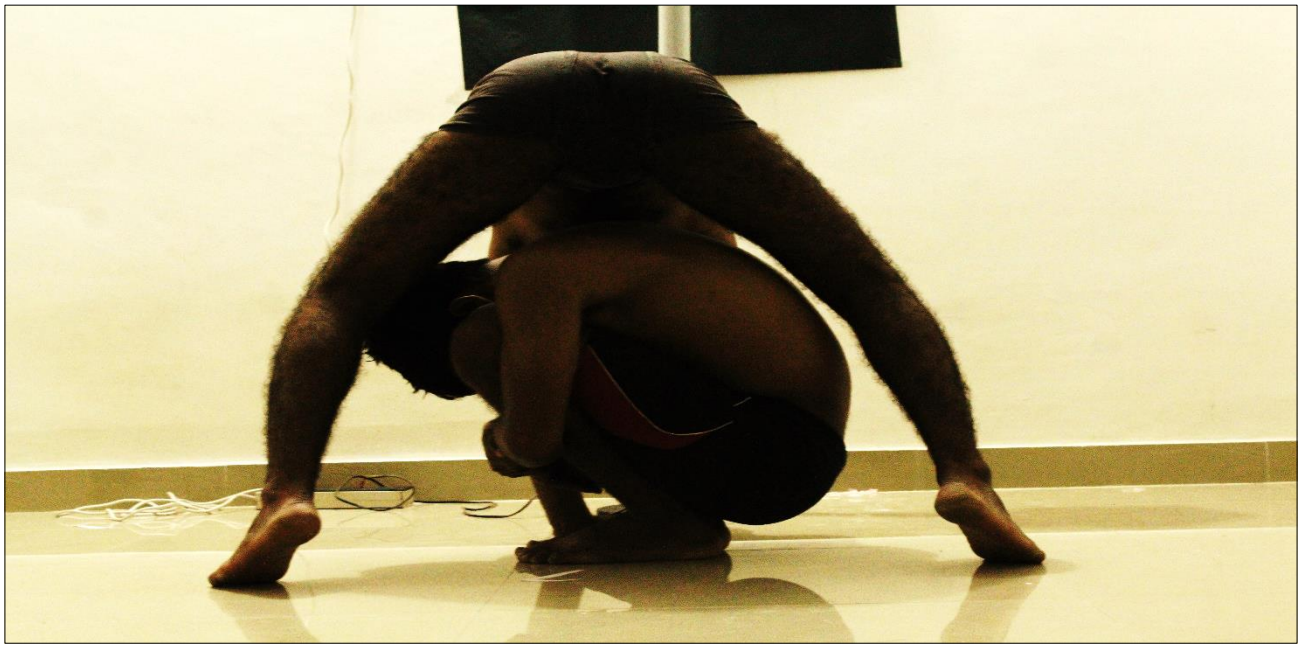

इस द्वितीय चरण में तीन माह चले इस निरमानिक कार्य का प्रस्तुति अंश अभी भी शेष रहा है। इस कार्य के लिए संभागी अभिनेताओं ने लगातार सामाजिक विकास के नाना सिद्धांतों एवं विचारो के शैक्षणिक अनुभवों को अर्जित कर अपने स्वयं के मत का निर्माण किया है। इस प्राप्त शैक्षणिक, रंग अभिनय का अनुभव एवं शारीरिक गतिशीलता के अभ्यास को आगामी प्रस्तुति 'आई अँड मी' में संभागी इसका उपयोग कर सकेंगे।

इस नाट्य निर्माण के चरण को राजस्थान में आरंभ किया गया है और इलाहाबाद में संस्था के स्टुडियो प्रेक्षागृह में आमंत्रित इलाहाबाद के नाट्य समलोचकों के सामने इस प्रक्रिया को साझा किया गया। इस पूरी निर्माणिक प्रक्रिया को संस्था के राजकुमार रजक फेसिलिटेट कर रहे हैं।

इस अभिनय सिद्धांत निर्माण प्रक्रिया में में लगी लागत को संस्था के सदस्य राजकुमार रजक ने स्वैछिक रूप से सहायता प्रदान की है और अभिनेताओं को आगे के सामाजिक सिद्धांतों पर शैक्षणिक अनुभव प्राप्त करने के लिए अनुसंधान हेतु अभी तक कुल लगभग अपने स्तर पर 35 हज़ार रुपये का सहयोग दे चुके हैं।

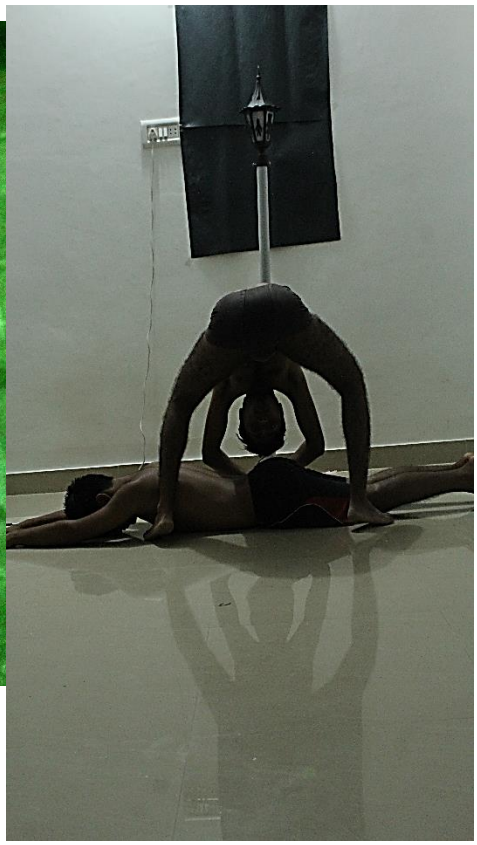

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय-अनवरनगर, टोंक, राजस्थान

जुलाई

27/07/2015 से 30/07/15 तक शिक्षकों के साथ शिक्षा में नाट्यकला के उपयोग एवं इसकी प्रकटी पर कार्यशाला किया गया। यह कार्यशाला भाषा पठन –पठन और सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में नाटक कैसे उपयोगी हो सकता है पर आधारित रहा है। इस कार्यशाला को संस्था सदस्य राजकुमार एवं रायना ने फेसिलिटेट किया। इस कार्यशाला में अलग-अलग कुल 8 विद्यालयों से कुल 17 शिक्षकों ने चार दिन भागीदारी की है। इस कार्यशाला का फालोअप कार्यशाला आगामी वर्ष 2016-17 में शिक्षकों के शैक्षणिक कैलेंडर के अनुसार तिथि तय की जानी है । नीचे दिये गए यू टुब लिक पर इस कार्यशाला के अंशों को देखा जा सकता है।

https://www.youtube.com/watch?v=o7IlPUydgds&feature=em-upload_owner

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय-अनवरनगर, टोंक, राजस्थान

<u>प्रमाण पत्र</u>

नाट्य निर्माण प्रस्तुति परक कार्यशाला

'बटरफ़्लाइ'

अगस्त से सितम्बर

इन माह से संस्था एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन ने इलाहाबाद के संस्था प्रतिबिब के संयुक्त तत्वावधन में नाटक 'बटरफ़्लाइ' नाट्य निर्माणिक कार्यशाला का सहभागी रहा है। यह नाट्य निर्माण में संस्था के सदस्य प्रतिबिब के सदस्यों के साथ मिल कर यह अनुभव अरजां किया है। इस नाटक का सम्पूर्ण निर्माणिक अभ्यास इलाहाबाद में रहा एवं इसकी प्रस्तुति की तिथि **माह दिसंबर, 2015** में संभव हो पायी।

इस प्रस्तुति परक की प्रक्रिया में कई प्रकार के रंग अभिनयों का उपयोग नाट्य निर्देशक संदीप जी ने किया। इस प्रस्तुति ने इलाहाबाद के युवा रंग निर्देशकों में एक रंग चितन की धारा को प्रेरित किया है।

कार्यशाला में हुए अनुभवों के आधार पर संस्था के सदस्यों ने आगामी वर्ष भी एक ऐसी तत्वावधानिक प्रस्तुति की पुनः आशा भी रखते हैं । क्योंकि विविध रंग समूहों के साथ कार्य करने में विविध रंग समूहों के विविध आयामों से रूबरू होने का अवसर भी प्राप्त होता है। जो रंग विमर्श में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। नीचे दिये जा रहे यू ट्यूब के लिक के माध्यम से नाट्य प्रस्तति के अंशों को देखा जा सकता है।

https://www.youtube.com/watch?v=cHMWdHkP_zs&feature=em-upload_owner

About The Play:

The story revolves around the life of a teenage girl who goes through a lot of difficulties and social evils at her tender age. She has to leave behind the cheerfulness of childhood and engage herself in the household chores after she is married off to an elderly person. Her husband takes pleasure when she is in pain. In a short period of time she becomes pregnant and gives birth to a premature baby who dies soon after birth. She finally develops the courage to flee from bondage and manages to escape several instances of harassment before she is finally rescued by a gracious gentleman. One evening they go out to the market where the girl's husband finds her and follows them back to the house. The girl, in the process of trying to save herself ends up killing her husband. Police discovers about the murder and takes her in custody. She is brought to the court for prosecution and is sentenced to be executed.

Director's Note:

The story has been conceived from two case studies. The issue of child marriage in Guatemala, the plight of those girls for survival and the case of Iranian woman Reyhaneh Jabbari, who was executed on 25th October 2014 for murdering her alleged assailant. The bridge connecting the two stories is the incapability of the law in both countries to protect its women and ensure them a secure life. The victims of both cases are very young girls. The girls in Guatemala are around 11 to 14 when they are married off. They conceive in a year and are abandoned by their husbands sooner or later. Their determination to fight their battle against hardships regardless of their age is what is extremely inspiring. Reyhaneh was only 19 years old when she was imprisoned for murder. She was brutally tortured in prison for 7 years and later executed. The play draws elements from both cases and has incorporated it in the essence of the play.

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
डेली न्यूज़
ऐक्टिविस्ट
इलाहाबाद, बुधवार, 30 दिसंबर 2015

झलका बाल विवाह का दर्द

डेली न्यूज़ नेटवर्क

इलाहाबाद। नाट्य संस्था प्रतिबिम्ब एवं एक्सट्रा इन आर्गेनाइजेशन के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (एनसीजेडसीसी) में नाटक 'बटरफ्लाई' का मंचन किया गया। इसमें बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीति पर प्रहार किया गया। प्रस्तुति की परिकल्पना एवं निर्देशन संदीप यादव ने किया। प्रस्तुति में दिखाया गया कि कम उम्र में शादी होने के बाद एक लड़की को घरेलु हिंसा का शिकार होना पड़ता है। इससे बचने के लिए वह घर से भाग जाती है। अंत में महिला द्वारा पुरूष का खून हो जाता है कि लेकिन कानून भी महिला पर कोई रहम नहीं करता। इसमें शिवानी भारतीय, भास्कर शर्मा, आकाश अग्रवाल, अनुज कुमार, शेफाली सागर, कोमल पाण्डेय, लवकुश यादव, अमित उपाध्याय, अभिषेक गुप्ता व भानु पाण्डेय ने अभिनय किया।

एनसीजेडसीसी में नाटक 'बटरफ्लाई' का मंचन

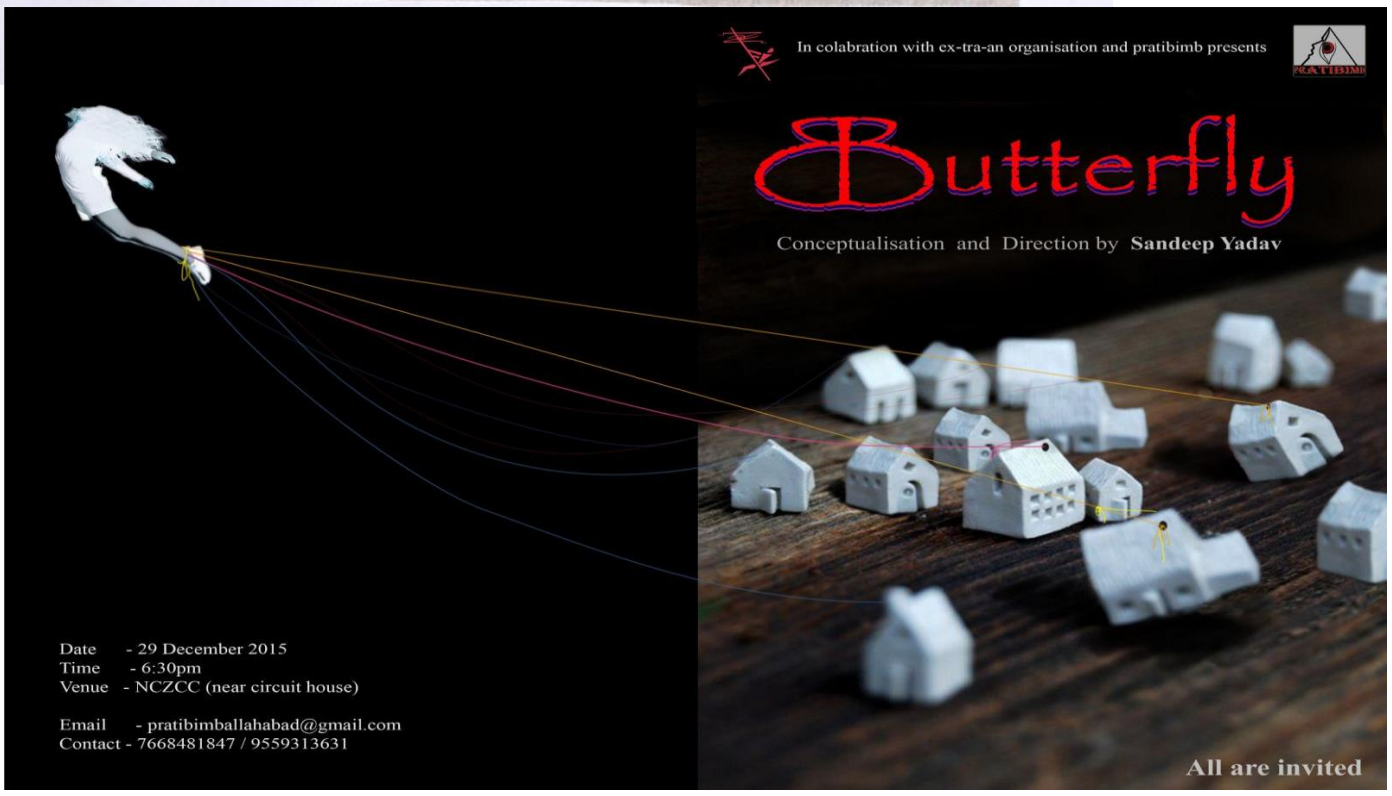

PRATIBIMB

image of social,literature and cultural activities

Reg no 1210 (2013-14)

दिनांक: 13/2/2016

सेवा में,

सचिव,
एक्स्ट्रा एन ऑर्गेनाइजेशन
इलाहाबाद।

विषय : सहृदय धन्यवाद पत्र।

महोदय,

संस्था **प्रतिबिम्ब** द्वारा संदीप यादव द्वारा लिखित एवं निर्देशित नाट्य प्रस्तुति **'बटरफ्लाई'** को मंच प्रदान करने हेतु **एक्स्ट्रा एन ऑर्गेनाइजेशन, इलाहाबाद** के आर्थिक सहयोग एवं संस्थागत सहभागिता से 29 दिसम्बर 2015 को उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद के प्रेक्षागृह में नाटक का सफल मंचन संभव हो सका। इस पत्र के माध्यम से **एक्स्ट्रा एन ऑर्गेनाइजेशन, इलाहाबाद** को हम सहृदय आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करते हैं और अपने आगामी क्रिया-कलापों में भी आवश्यकतानुकूल सहयोग एवं सहभागिता की आशा करते हैं।

एक्स्ट्रा एन ऑर्गेनाइजेशन द्वारा प्रतिबिम्ब, इलाहाबाद को प्रदान सहयोग : –

क्र०सं०	कार्य	धनराशि
1.	प्रेक्षागृह के आरक्षण हेतु	6500 : 00
2.	ब्रोशर एवं पोस्टर हेतु	2000 : 00
	कुल योग – 8500 : 00	

निदेशक
सिद्धार्थ पाल
अध्यक्ष
प्रतिबिम्ब, इलाहाबाद
मो० : 09559313631

Office:- (1) 17A/19D/17,Gali No.10/2,Ganganagar,Rajapur,Allahabad-211001(U.P.)
(2) Vill & Post-Ashwaniya,Bardah,Lalganj,Dist- Azamgarh-276301 (U.P.)
Contact - 09559313631, 09335392468, 09026211648, 0987934548, 08009405457
Email:- pratibimballahabad@gmail.com

इलाहाबाद | बुधवार | 30 दिसंबर 2015

'बटरफ्लाई' ने उठाया महिला सुरक्षा पर सवाल

इलाहाबाद(ब्यूरो)। प्रतिबिंब और एक्सट्रा-एन-आर्गेनाइजेशन के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को सांस्कृतिक केंद्र में 'बटरफ्लाई' नाटक का मंचन किया गया। गोयटामाला में बाल विवाह और ईरान की रेहाना जब्बारी को दी गई फांसी की सजा की दो सच्ची घटनाओं को एक ही नाटक में दिखाया गया। संदीप यादव के निर्देशन में महिलाओं की सुरक्षा के सवालों को बखूबी उठाया गया। नाटक की शुरुआत से लेकर अंत तक अदाकारों ने दर्शकों को अपने सशक्त अभिनय से बांधे रखा। नाटक में शिवानी भारतीय, भास्कर शर्मा, आकाश अग्रवाल, अचुज कुमार, शेफाली सागर, कोमल पांडेय, लवकुश यादव, अंगित उपाध्याय, अभिषेक गुप्ता, भानु पांडेय ने अभिनय किया। नाटक में सह निर्देशन अचुज कुमार, प्रकाश व्यवस्था संदीप यादव और मंच व्यवस्था शुभम पांडेय, इंद्रजीत सिंह, प्रिया सिंह, चंकी बच्चन, सत्यम उपाध्याय, अमर दीप ने संभाली।

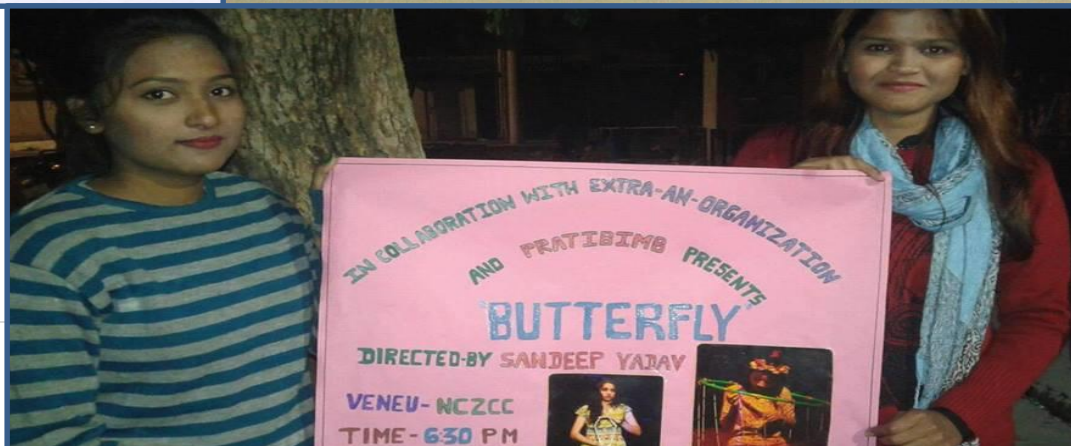

कार्यशाला : सिबोलीक इंट्राकशन एवं अभिनेता का विकास का इंटीग्रेशन

अक्टोबर से नवम्बर

दो मासिक गैर अवासीय कार्यशाला का संस्था ने संस्था के सदस्यों के क्षमता वर्धन हेतु दिनांक 5 अक्टोबर से दिनांक 17 नवम्बर, 2015 तक आयोजन किया। इस कार्यशाला में संस्था के समस्त सदस्यों ने संभाग किया। यह कार्यशाला मूल रूप से **सिबोलीक इंट्राकशन** को विस्तृत रूप से समझने एवं इसका इंटीग्रेशन अभिनेता के विकास में इसकी भूमिका पर आधारित रहा है। माह अप्रैल से जून तक हुए कार्य में शामिल अभिनेताओं ने भी अपने पूर्व अनुभवों एवं अनुसन्धानों को साझा किया। इस कार्यशाला को मुख्य रूप से राजकुमार रजक ने फेसिलिटेट किया। इस कार्यशाला में उपयोग में लिए गए पीपीटी एवं आलेखों के स्नैप शॉट निम्न प्रकर से हैं:

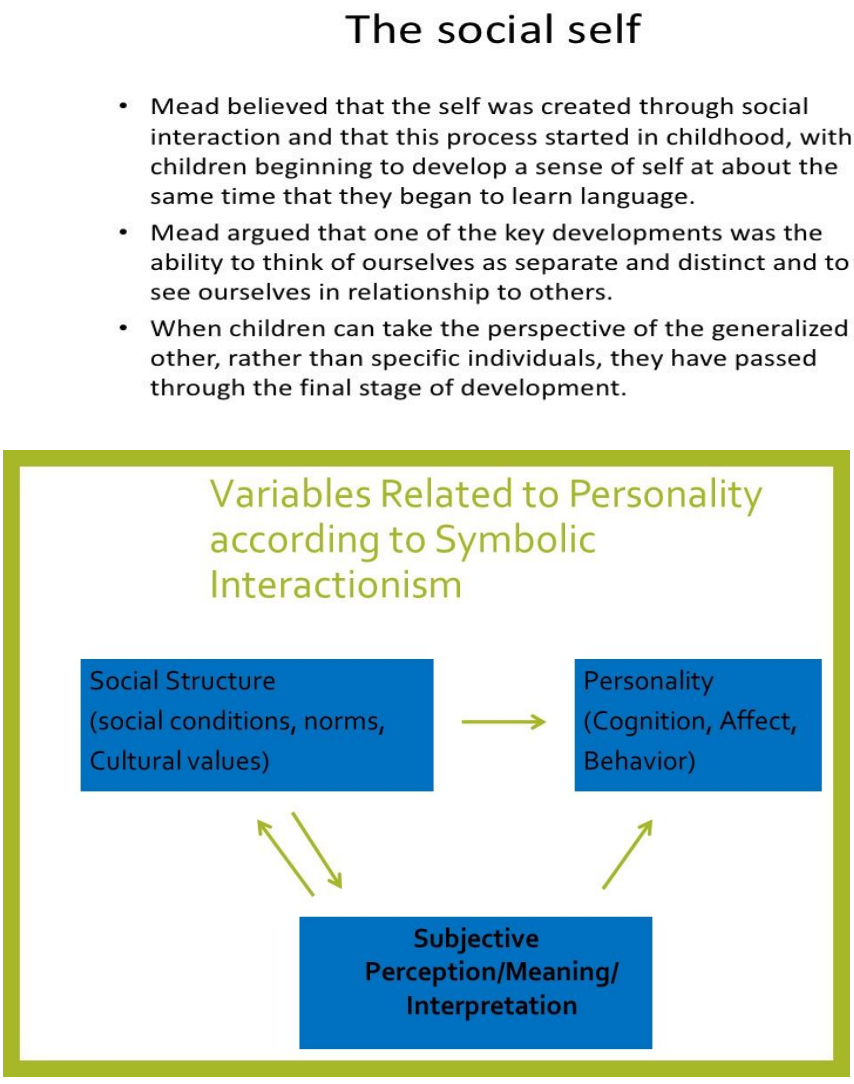

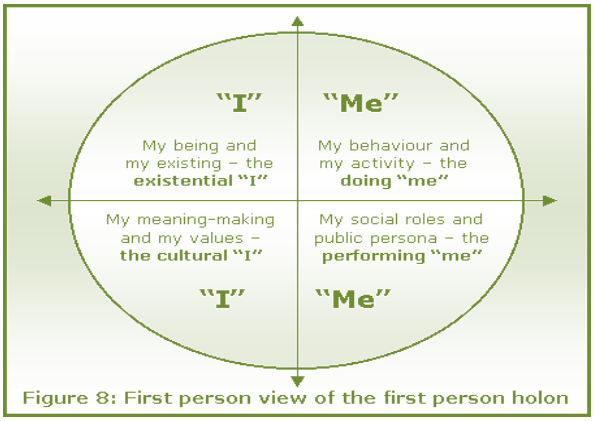

Figure 8: First person view of the first person holon

कार्यशाला में उपयोग लिए गए आलेख:

- **A Sociological Approach to Self and Identity**

  (Jan E. Stets and Peter J. Burke, Department of Sociology Washington State University**)**

- **The presentation of self in everyday life**

  (Erving Goffman)

2015

दिसम्बर

से

फरवरी

कार्यशाला: नाट्य निर्माण कार्यशाला

नीली नैया

लगभग दो माह से अधिक नाट्य निर्माण कार्यशाला प्रक्रिया के दौरान यह नाट्य प्रस्तुति को कोलकाता, उदयपुर, जयपुर, इलाहाबाद के सहयोगी अभिनेताओं एवं संस्था के स्थायी अभिनेताओं ने एक साथ मिलकर संस्था के गुरु एवं अध्यक्ष अजीत बाहादुर के निर्देशन में नाट्य निर्माणिक कार्य किया।

संस्था अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के आमंत्रण पर इस नाटक की सर्व प्रथम प्रस्तुति 13 जनवरी सायं 6.00 बजे राजस्थान के टोंक जिले में रखी गयी।

प्रिमियर हुए इस नाट्य प्रस्तुति के दौरान उपस्थित दर्शक के फीडबैक निम्न है:

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन फॉर डेवलोपमेंट

विषय-नीली नैया नाटक प्रस्तुतिकरण पर विचार /तुलिका से संजोई कुछ लाइन्स"

दिनांक -13-1-16

नाटक मे प्यास है ,पानी है |नाटक मे ठाकुर है ,ठाकुर का कुआ है ,पर पानी होते हुए भी वह सूखा है ,क्योकि हमारे नाटक का ठाकुर दिल से रुखा है ,नहीं है उसमे संवेदनाये ,स्फुरनाये की किसी के दर्द को जान पाए ,इंसानियत को अपने मे ला पाए |पानी बुनियाद है ,पानी जान है ,पानी से ही जहान है ,फिर क्यों इन्सान ,इंसान का लेता इन्तिहान है ,क्या यही जहान है ,सच मे कहू साथियों ये कल का

और आज का हिंदुस्तान है ,जो कल था ,वो आज भी है ,शायद हम भविष्य मे इसे बदल पाए |नाटक की एक पात्र ने कहा की फ्लो of ड्रीम ,साथियों उसी समय मेरे चेहरे की उतर गयी क्रीम और मै सोचने लगा की क्यों नहीं हो पाते हर इन्सान के ड्रीम |जब नाटक की पात्र कहने लगी यह संवाद की पानी बहुत कीमती है ,सच मे ,आज के युग मे भी यह नाटक उतना ही प्रासंगिकता रखता है ,जितना पहले के जमाने मे थी ,नाटक के एक मोड़ पे ,पानी इतना महंगा हो गया की जान और आबरू पर बन आयी , बिन पानी देखि जोखू और गंगी की दशा तो मेरी तो आखे भर आई ,नाटक के कलाकारों यही तुम्हारी कलाकारी का उपहार है की तुम अपनी कला मे प्रवीण हो गए हो की तुमने दर्शको को रुला डाला ,जो कुछ न समझ पाया ,उसे तुमने हंसा डाला |नाटक मे कई बार यू लगा की इन्सान ने इन्सान का पानी निकाल डाला ,कई बार यू लगा कितना भयानक है ,कितना डरावना है ,यह इंसान जो कुछ भी कर डालता है ,किसी को प्यास से तडपा -तडपा के मार डालता है |वास्तव मे इन्सान को खूब ही बनाया है ,उसकी फितरत मे क्या समाया है ,शायद ही कोई पहले से जान पाए,पर मेरी तो यही है रजा की इन्सान इन्सान के दर्द को जान पाए ,इन्सान के दुःख मे कुछ तो काम आये |नाटक ने समाज के उत्पीडन को दिखाया ,यह इन्सान भी भाती -भांति का होता है ,कोई किसी के दुःख को देख कर तड़प उठता है ,तो किसी को कोई दर्द देता है |

मुझे नाटक देख कर यह भी लगा की ठाकुर मरा नहीं ,वह आज भी बाजार के रूप मे आज भी जिन्दा है |पानी के लिए इन्सान पहले अपनी जान और आबरू गंवाता था ,आज का इन्सान पानी के लिए दाम चुकाता है |पहले पानी के लिय जान देनी पड़ती थी ,आज पानी के लिए कई बार जान लेली जाती है |आबरू की बात करे तो आज के इंसानों मे पानी (शर्म) नहीं ,इसलिए इंसानों मे मानवीय संवेदनाओ का कोई मोल नहीं |नाटक मानवीय संवेदनाओ को जगाता है ,इन्सान की सोई इंसानियत को जगाता है |कलाकारों ने वास्तव मे मेहनत दिखाई है ,उनके अभिनय मे हमारी आँखों ने जीवन्तता पायी है ,जिसके लिए वो शाबाशी के पात्र है|नाटक बहुत ही अच्छा लगा ,अजीम प्रेमजी टोंक परिवार आप सभी कलाकारों को शुभकामनाये देता है |

धन्यवाद ,शुभकामनाओ के साथ |

सादर -मनीष दत्त शर्मा (ब्लॉक उनियारा)

टोंक में हुए इस नाट्य प्रस्तुति के पश्चात नीली नैया की प्रस्तुति 30 जनवरी, 2016 को इलाहाबाद के वर्धा हिन्दी विश्वविद्यालय एवं 1 फरवरी, 2016 को इलाहाबाद में हुई। संस्था के लिए यह बहुत ही अच्छा अवसर रहा की नाटक नीली नैया के नाट्य निर्देशक अजीत बहादुर को भारतेन्दु नाट्य अकादमी ने निर्माणिक सहायता प्राप्त की । इससे नाट्य निर्माणिक प्रक्रिया को और भी अधिक बल, दर्शक एवं सुझाव मिले। अब यहाँ से यह नाट्य प्रस्तुति अगले चरण के पूर्वाभ्यास के लिए माह मार्च में राजस्थान के बीकानेर में एकत्र होगी एवं 1-4 अप्रैल, 2016 में संस्था द्वारा आयोजित नाट्य उत्सव में प्रदर्शित होगी।

About the Play:

Play “Neeli Naiya” is inspired by a story written by Munshi Premchand, “Thakur Ka Kuan”. Where drinking water is not available to 'Jokhus' because of the 'Thakuriyat' of the 'Thakurs'. The play 'Neeli Naiya' continues its theatrical flow keeping the water in center. In the present scenario of globalization, water is coming under the possession of Market, who is spreading his power in the form of 'Contemporary Mahathakur'. In these incidences, Water narrates her own sad story and presents the example of Jokhu and Gangi. The title of Neeli Naiya is a symbol of life on earth, where blue earth is chanting her sagas of danger which were erupted by wrath of market and power and all kind of discrimination developed in the socialization of society by human being, on this earth only. The one who evolve all kind of living phenomenon in an equal way and market...

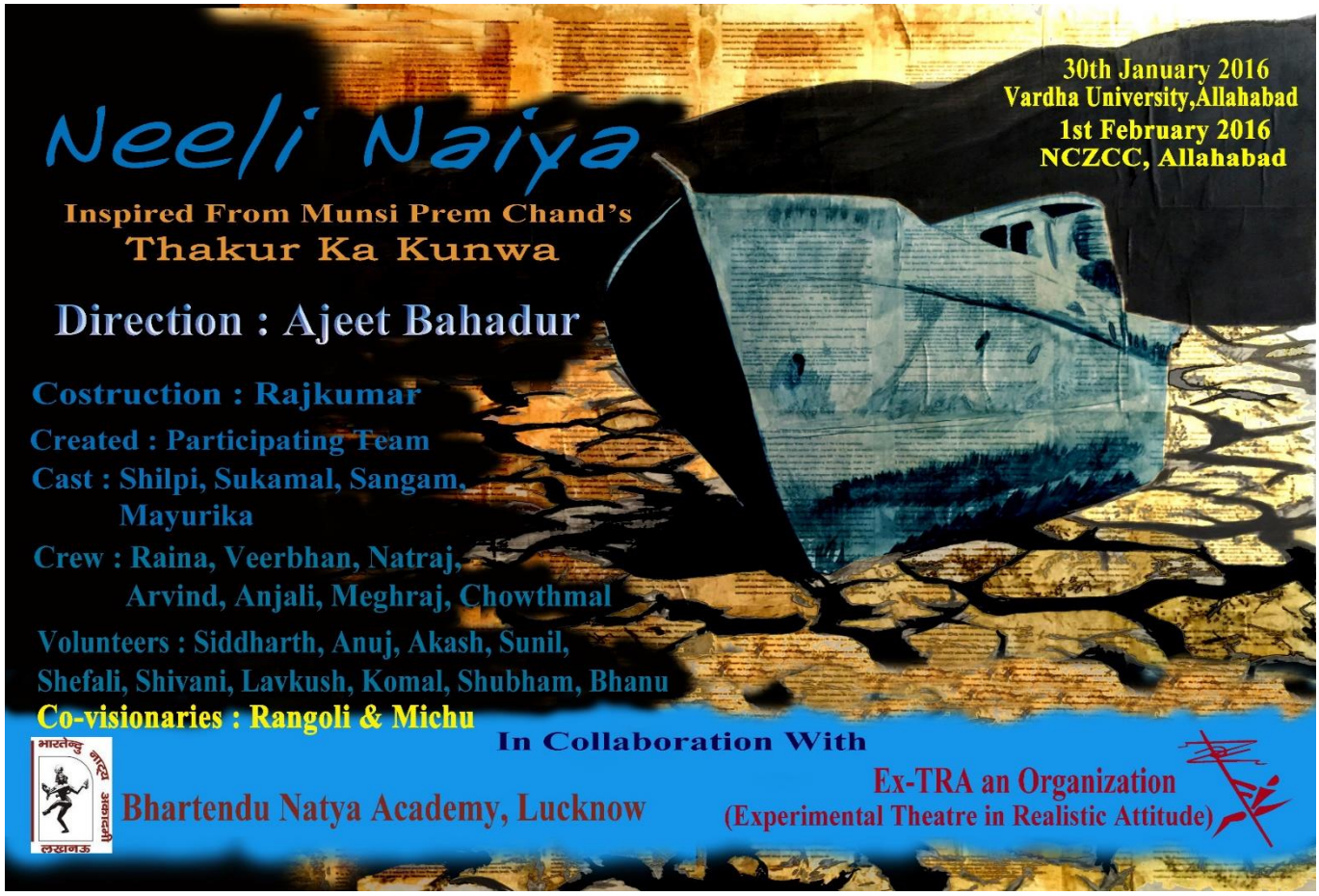

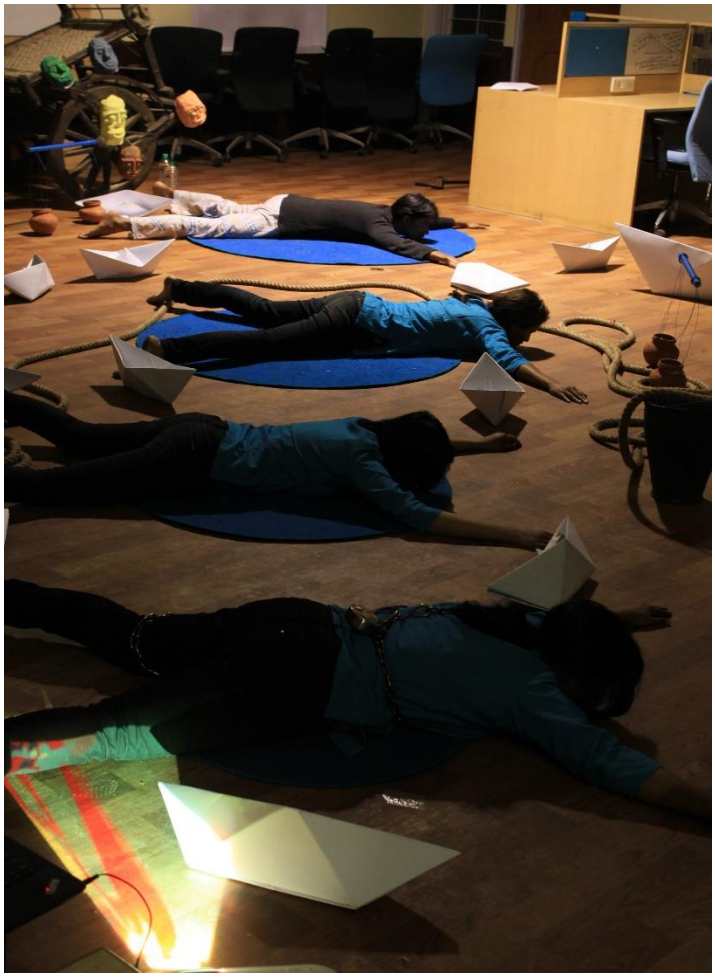

Play Construction Process:

Production based Theater Workshop organized by Bhartendu Natya Acedemy, Lukhnow (Department of Sanskrit, Uttar Pradesh Government) is directed by Ajeet Bahadur. Play Neeli Naiya has been produced during this workshop. First and foremost, we were working on the theme of 'thirst', 'water' and 'market' during the play development process of Neeli Naiya. In this progression, the theme of Thakur ka Kuan from the story of Munshi Premchand has proposed to play production team. This has been prove fruitful for the content of play development and development team proceed in this direction that water needs to have its own story and with this, the contemporary relationship of Jokhu, Gangi, Thakur and Maha-Thakur (Market) need to be highlighted.

With these contents, Rajkumar's developed acting method/approach 'character expression' is used for play production. In this approach, the characteristics adjectives of roles has been taken as 'character' itself and their communication as well as social interaction are tried to communicate through the expression of body and dialogues by associate actors.

During this play, audience engages with emotional interaction with actors and only actors break this emotional interaction while relating audience again with the active theater ambiance/environment. Instead of becoming emotion with the discourse of interaction, audience becomes active and starts thinking about the content of play. This active audience, analyses the content of play in collaboration as a active actor.

In this direction, the suggestion of audience is always welcomed in order to promote active production in this approach and process.

नाट्य प्रक्रिया के अंशों को नीचे साझा किया जा रहे यू ट्यूब लिक के माध्यम से देखा जा सकता है:

https://www.youtube.com/watch?v=Cl-1iPE4UnI&feature=em-upload_owner

इलाहाबाद, 2 फरवरी 2016 दैनिक जागरण

फिर दोहराया इतिहास 'पानी' अमीरों के पास

◆ एनसीजेडसीसी में नाटक 'नीली नैया' का हुआ मंचन

जासं, इलाहाबाद : एक जमाना था जब पानी सिर्फ जमींदारों या बड़े घरानों में हुआ करता था। वर्तमान समय में भी पीने योग्य पानी सिर्फ अमीर लोगों के पास ही है। इसी पर कड़ा प्रहार करती हुई नाटक 'नीली नैया' का सोमवार को उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एनसीजेडसीसी) में भावपूर्ण मंचन हुआ।

मुंशी प्रेमचंद्र की कहानी 'ठाकुर का कुंवा' कहानी से प्रेरित इस नाटक में पानी के समकालीन संकटों को दर्शाया गया है। उस दौरान जहां पानी का स्रोत ठाकुर या जमींदारों के पास हुआ करता था, आज वहीं पानी उनके हाथ से निकलकर बाजार में पहुंच गया है। मतलब अब भी अमीरों के पास ही है। आम लोग आज भी दूषित पानी पर मजबूर हैं। यह नाटक सत्ता के द्वंद और पानी की महागाथा को सामने लाता है। नाटक का निर्देशन एक्सट्रा संस्थान के अजीत बहादुर ने किया। इसमें शिल्पीकर, सुकमल मैत्रा, संगम, मयूरीका, नटराज, रायना, वीरभान, सिद्धार्थ, मेघराज व चौथमल ने किरदार निभाया।

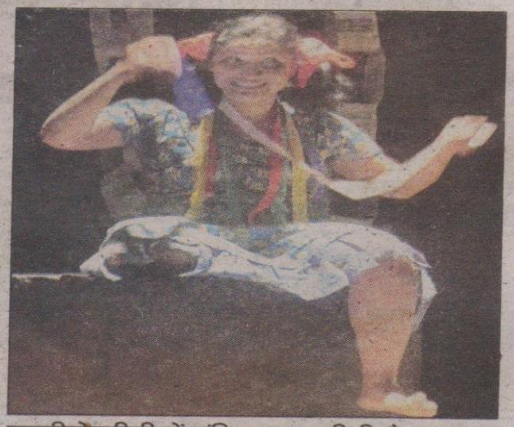

एनसीजेडसीसी में मंचित नाटक नीली नैया का एक भावपूर्ण दृश्य।

बांग्ला नाटक का मंचन : एनसीजेडसीसी में शाम को एक्सट्रा संस्था की ओर से बांग्ला नाटक रुद्ध शोइशब का भी मंचन हुआ। नाटक का निर्देशन सुकमल मैत्रा ने किया। रंगकर्मी सिद्धार्थ, आकाश, सुनील, लवकुश, शुभम एवं मिचू मौजूद रहे।

इलाहाबाद । मंगलवार । 2 फरवरी 2016 अमर उजाला

सामाजिक व्यवस्थाओं पर किया व्यंग्य

इलाहाबाद (ब्यूरो)। एक्सट्रा ए आर्गनाइजेशन की ओर से सांस्कृतिक केंद्र में सोमवार को 'नीली नैया' और 'रुद्ध शोइरब' नाटकों का मंचन किया गया। कलाकारों के सशक्त अभिनय को दर्शकों ने काफी पसंद किया गया। मुंशी प्रेमचंद्र की कहानी ठाकुर का कुंआ से प्रेरित नाटक 'नीली नैया' का निर्देशन अजीत बहादुर ने बखूबी किया। नाटक पानी की समकालीन संकटों से दर्शकों के साथ अंतःक्रिया करता है। जहां पानी आज ठाकुर या जमींदार के गिरफ्त ने निकल कर बाजार में आ गया है। नाटक में बखूबी दिखाया गया है कि पानी जीवन की अनिवार्य शर्त होने के बाद भी आज साफ साफी लोगों को उपलब्ध नहीं है। नाटक में शिल्पी कर, सुकमल मैत्रा, संगम, मयूरीका, नटराज, रायना, वीरभान, सिद्धार्थ, मेघराज और चौथमल ने अभिनय किया। सुकमल मैत्रा के निर्देशन में 'रुद्ध शोइशब' नाटक में एक बच्चे की कहानी के माध्यम से बाल मजदूरी के खिलाफ आवाज उठाई गई। एकल अभिनय में शिल्पी के अभिनय को पसंद किया गया। मंच से परे सिद्धार्थ, आकाश, सुनील, लवकुश, शुभम एवं मिचू ने जिम्मेदारी संभाली।

शिल्पभूमि कोलकाता के साथ संयुक्त तत्वावधान में नाट्य प्रस्तुति : रुद्ध शोइशब

शिल्पभूमि कोलकाता के संयुक्त तत्वावधान में नाटक रुद्ध शोइशब की नाट्य प्रस्तुति को इलाहाबाद उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र में दिनांक 1 ला फरवरी, 2016 को दर्शकों से साझा किया गया। इस नाटक के निर्देशक सुकमल मैत्रा एवं अभिनेत्री शिल्पी कर रहीं। इस नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से संस्था के अभिनेताओं को अभिनेता एवं नव रसों के साथ सामंजस्य एवं इनकी प्रकृति का हमारे मांसपेसियों पर क्या प्रभाव पड़ता है के अनुभवों से अवगत हुए। नीचे साझा किए जा रहे यू ट्यूब लिक की सहायता से नाट्य प्रस्तुति के अंशों को देखा जा सकता है।

https://www.youtube.com/watch?v=cHMWdHkP_zs&feature=em-upload_owner

Summary of The Play

A little maid servant whose name is Tiya shows gradually her lost dreams, days, and pains before the audience in this play. She has confined in a room by her master. She trying to built up her lost village by her imagination in this room where the concrete pillar turned into the banyan tree, wooden furniture turned into the boats, the room appears to her as the Kumar river and the straw made hut of her Krishnapur village. She thinks the only little window as her friend in that confined room with whom she gossip, but after all she realized that she is confined and nobody will released her from here.

Why This Play

According to Bertrand Russell "Children should be free citizen of the universe", but the real picture of the world shown the opposite of this opinion. While a child need to play need to learning just then he engaged in a factory, tea store, grossary shop, van-pooler, domestic servant as a hard working labour. This is not the picture of India only, it's a global picture. "Ruddha Shaishab" is of such a child's story who lost her childhood, who had been sent by her parents from a remote village to rich family in a metro city as a maid servant. Who has been confined in bondage in a home in town from liberation of her village life. This play raises protest against child labour. It is time to raises voice against child labour because children are the future of the every society, every country. We should not be treated them like an Animal and spoil their future as well as the future of our society – our world. this play is a strong protest to the all class people who sent their child to work and who keep a child for working.

Back Stage : Amit, Goutam, Krishna, Satyajit, Kanta

Address : Ramkrishna Park, D-Block, Rahara,Khardha,Kolkata-700119,WB
Correspondence Address : 75 Netaji Subhas Road,P.O.-Panihati, Kolkata-700114,WB
Contact No. : +91-9432153371/+91-9051082829/+91-9062478949
E-mail : shilpobhumi@yahoo.com

Kolkata SHILPOBHUMI
Production

Supported By
Ex-TRA an Organization

Ruddha Shaishav
. . . a Confined Childhood

1st February 2016
NCZCC, Allahabad, UP
6 P.M.

Monologue By : Shilpi Kar
Playwright & Direction : Sukamal Maitra
Back Stage : Ajeet, Rajkumar, Siddhart, Raina, Birvan, Sangam, Mayurika, Amit, Goutam

inext, Allahabad, 2 February 2016

Another award for Best actor in a comic role!

PIC: INEXT

एनसीजेडसीसी में नाट्य प्रस्तुति के भावपूर्ण दृश्य में कलाकार.

'रुद्ध शोइशब' में जीवंत किया बच्चों का दर्द

» एक्स्ट्रा संस्था की ओर से एनसीजेडसीसी हाल में हुआ नाटकों का शानदार मंचन

allahabad@inext.co.in

ALLAHABAD (1 Feb): एक्स्ट्रा आर्गनाइजेशन की ओर से सोमवार को एनसीजेडसीसी प्रेक्षागृह में दो नाटकों का शानदार मंचन हुआ. नीली नैया और रुद्ध शोइशब के शानदार मंचन ने दर्शकों को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया. पहला नाटक कुंआ और दूसरा बच्चों पर आधारित था.

मंच देख भाव विभोर हुए दर्शक

नाटक नीली नैया नाटक अजीत बहादुर के निर्देशन में मुंशी प्रेमचंद की कहानी ठाकुर का कुंआ से प्रेरित था. लोगों को समझाने की कोशिश की गई कि पानी का संकट लगातार गहराता जा रहा है. नाटक में शिल्पी कर, सुकमल मैत्रा, संगम, मयूरी आदि का प्रदर्शन सराहनीय रहा.

बचपन बचाने की फिक्र

रुद्ध शोइशब नाटक बाल मजदूरी पर आधारित था. जिसमें यह दिखाया गया कि बच्चे स्वतंत्र नागरिक होने चाहिए, लेकिन आज के समय में इसकी वास्तविकता बिल्कुल अलग है. जिस समय बच्चों को खेलना-कूदना चाहिए, वे कारखाने व चाय पान की दुकानों पर काम करते हुए पाए जाते हैं. भूमिका शिल्पी कर ने निभाई. अन्य भूमिका में सिद्धार्थ, आकाश, सुनील व लवकुश शामिल थे.

नाट्य निर्माण एवं प्रस्तुति : अंतर्यात्रा

नाट्य निर्माण प्रक्रिया में तीन नाटकों के विषयवस्तुओं को समाहित किया गया है। एस्काइलस का नाटक प्रोमिथियूस ऑन बौण्ड शेक्सपियर का मैकबेथ एवं धर्मवीर भारती का श्रीष्टि का आखिरी अदिमी। इस नाट्य निर्माण के विषयवस्तु का आरंभिक एवं प्रेरित बिन्दु रबीन्द्र नाथ ठाकुर की कविता 'अफ्रीका' रही है।

इस नाट्य निर्माण प्रक्रिया को संस्था ने समय –समय पर कई चरणों में चलाया। इस निर्माणिक प्रक्रिया में आठ अभिनेता एवं सहायक समूह शामिल रहा है। जिसमें चार सदस्य इस नाट्य निर्माण में स्वैच्छिक रूप से जुड़े रहे ।

प्रस्तुति हेतु कई गानो की रचना समभागी समूह ने किया।

संस्था में अब तक के निर्माण का यह एक अनोखा निर्माण या यू कहें की बड़े –बड़े क्लासिक्स पर काम करने की संस्था ने इस बार हिम्मत सँजोयी । काफी अनूठा अनुभव रहा है। प्रस्तुति से पूर्व लगभग एक माह से स्थायी दर्शकों एवं अस्थायी दर्शकों से लगातार विमर्श होता रहा है। विमर्श का मुद्दा मुख्य रूप से दो प्रकार के रहे पहला कि नाटक कि विषयवस्तु क्या है एवं दूसरा कि प्रस्तुति प्रक्रिया कि शैली क्या है ।

यह काफी उल्लेखनीय है कि दर्शकों ने बढ़ –चढ़ कर प्रस्तुति पूर्व मनुष्य की अवस्थाओं पर हो रहे विमर्शों में भी शामिल रहे । यह इस नाट्य निर्माण की रीढ़ रही है । संस्था इस प्रक्रिया को आने वाले नतून नाट्य प्रक्रियाओं में भी दर्शकों के साथ विमर्शों की इस शैली का उपयोग करने के मन्तव्य पर मंथन कर रही है। नाट्य प्रस्तुति के अंशों को नीचे दिये जा रहे यू ट्यूब के लिक के माध्यम से देखा जा सकेगा।

https://www.youtube.com/watch?v=MGGYFWaWzuw&feature=em-upload_owner

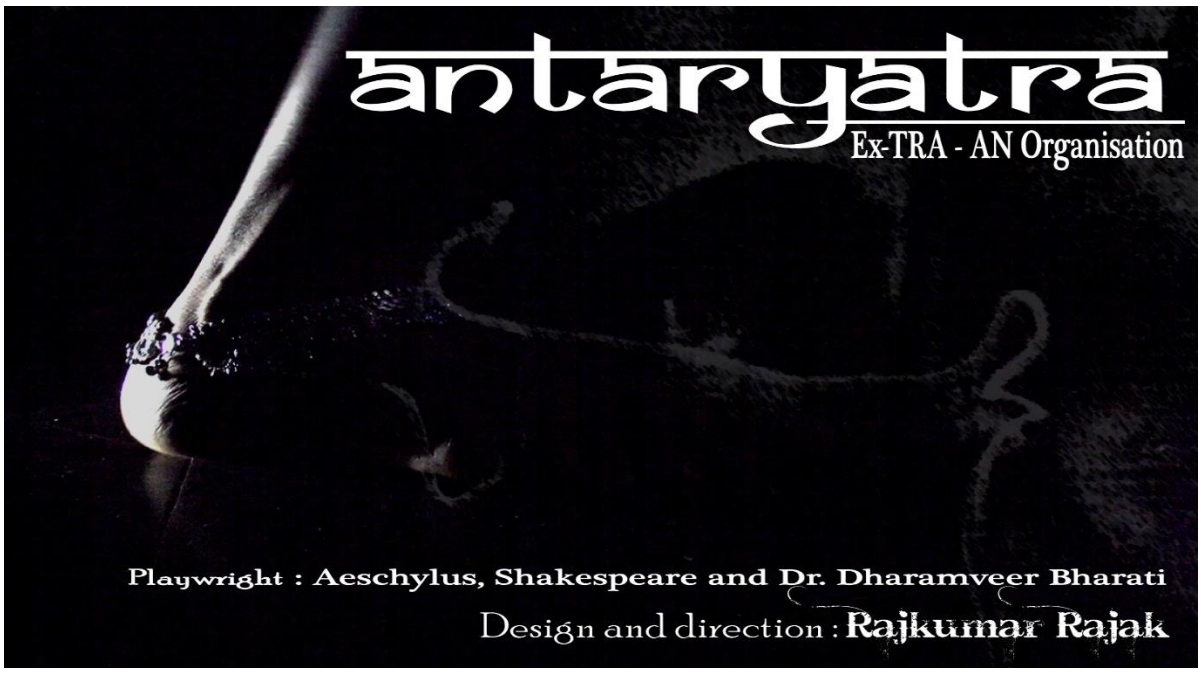

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD
भारत INDIA
250
इन्दिरा गांधी INDIRA GANDHI
antaryatra
To, The Audience
(इस लाइन के नीचे न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line)
पिन PIN
यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE
दूसरा मोड़ SECOND FOLD
इस पत्र के अन्दर कुछ न रखें NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—
From - Antaryatra team
पिन PIN
जागो ग्राहक जागो
पहला मोड़ FIRST FOLD
Credits -
Light Design Rajkumar Rajak
Make up N Costume Rajendra Panchal
Play Ambience Arvind Jodha, Anjali Shekhawat
Set Design Rajkumar Rajak
Production Management Raina Raha
Photo N Video Anurag Anant, Dishari Raha
Technical support Veerbhan, Arijit Sen
Poster Design Swetaketu Majumder
Method Application Advisor Mr. Shantanu Bose
Play wright Aeschylus, Shakespeare, Dr. Dharmaveer Bharati
Poems N paintings Rabindranath Tagore
Music Director Sayan Chakrabarty
Assistant Music Director Swetaketu Majumder
Song Writer Shiv Kumar Saroj
Design N Direction Rajkumar Rajak
with gratitude
Inlaks Foundation, Ajeet Bahadur, Anupam Anand
Krishna Shrivastava, Abhinay Bhardwaj, Govind Bhardwaj
Sunil Acharya, Suresh Acharya, Ashish Purohit.

synopsis

Antaryatra hamare sabhyata ki yatra hai, jo hamare dincharya mein vyapt hai. Jisme ***Prometheus*** n swarg ki agni lakshyaheen manushyon ko saunpee aur zeus ke krodh ka shikar huwa tatha manushy sabhyata chakra mein ***Macbeth*** jaise yodha jo apne matrabhumi ko sankaton se ubarne ke liye prastut hote the; Wahi aaj nar-sanghar par utar rahe hain ewam aisi satta ko nashht karne jo nayi satta Ki sthapana karta hai, wo bhi nar-sanghar aur koorup drishti gochar hai. In sabhi paridnatiyon se trast log jinke ander wo aag mar chuki hai, jo manvik sabhyata ki neev rakhate hain usko punah zinda karne kii aas ***srishti ka aakhiri admi*** hai,jo hamame hee samahit hai. Jinke qadam-qadam ki rachana se ek nutan srishti, nutan manvik sabhyata ke sthapana ki neev ki shuruwat ho payegi.

director's note

Har sadi me manushya ne apne sabhyata ki uplabdhi ki hai trasad purna kalatit mein. Mere chintan ki iis bechainee mein Rabindra Nath Thakur ki kavita 'AFRICA' ne ek naya mod diya sabhyataon ke vinash ewam sthapan ke vichar mein. Manushya iis antarim yatra mein aaj apni mahatwakankshaon ke jatiltam path par samvedanshilta bahut piche chhod ta ja rahahai. Jisse manushya vapas sabhyata purva sadi mein pahunchane laga hai. Jahan manushya apne andherepurna jivan mein vikaral hinsra tha. Jo aaj ke abhi mein bahut samahit hai.

leftvission@gmail.com

The Cast

Samata Agrawal

Is Antaryatra ke hum-tum raahi. Koi raja, koi praja, koi janta koi sipahi. Ek khoj si, ek sawal, ek khidki, ek akriti? Aasha hai aapki yatra shubh aur mangal ho.

sam_agl@yahoo.co.in

Kaushik Podder

Psycho physical theatre k is teen mahine se chalne wala workshop mera nazariya badal diya hai.

Sayan Chakrabarty

main sayan chakroborty meri rangma -nch ki suruwat mere pita mr.sanjoy c -hakroborty jo rang nirdeshak & rang alochak hain jinke marg darshan me meri rangyatra ka aghaz hua tatha aj hain subikhyat rang nirdeshak-o ke sath bataur avine ta tatha sangit nirdeshak ke jimmedario ko srijanatma : tarikese niva chuka hu.

chakrabarty@india.com

Vinod Saroj

Mujhe kishoravastha se hi avinay mein ruchi rahi hain.rangmanch mere avinoy aur jiban ki tartamayata ko atmasat karne me margdarshak bana hai.rang-avinoy me -ri jarurat hai.kyunki avinoy hamare babahrik jiban ka spasta pratibimba hain.is mano-sariri -k workshop ne mujhe avinoy ke bargikaran & bari kio ko janne me madat ki.

vinodsaroj11@gmail.com

Sandeep Yadav

ExTRA-An Organisation ki taraf s -e is workshop mei humne kafi k -uch seekha.Mai agr apni baat kr -u to main as an artist theatre ki har baariki ko samjha or jab baar -iki ko khud krke dekha to or bhi ideas create hone lage or mera confidence badh gaya.

ayaz8916@gmail.com

Shiv Kumar Saroj

Is mano sharirik karyashala ke dauraan mujhe to pehle Director ke roop mein ek sachche deshpremi insaan se bhet huyi jo har galat kaam ke viruddh awaz uthane ki prerna diya.Mere andhar chupi saari pratibha ab saamne aane lagi hai. Ab to har laksh asaan jan padhta hai.

shivksaroj@gmail.com

Siddharth Pal

Psycho Physical theatre ki is kary- -shala ko karne ka mera ek hi ud- -deshya tha ki rangmanch ki is vi- -dha ka achha gyan prapt kar sa- -ku aur ab mujhe khushi hai ki mujhe apni guru shri Rajkumar Rajak ke nird- -eshan mein Antaryatra natak prastut karne ka awasar prapt ho raha hai.

siddhuyou@gmail.com

Aditya Agnihotri

Ye meri pratham Rangmanchiya karya -shala hai. Maine is workshop mei psych- -o physical theatre ke baare mein jana. R- -ajkumar Rajak ka nirdeshan, unka vyav- -har aur unke bicharo ne mujhe attyant prabhavit kiya. Unhone mere sochne ke tarike ko ek nayi disha di.

madityaagnihotri@yahoo.com

Special thanks to Gyan.. :)

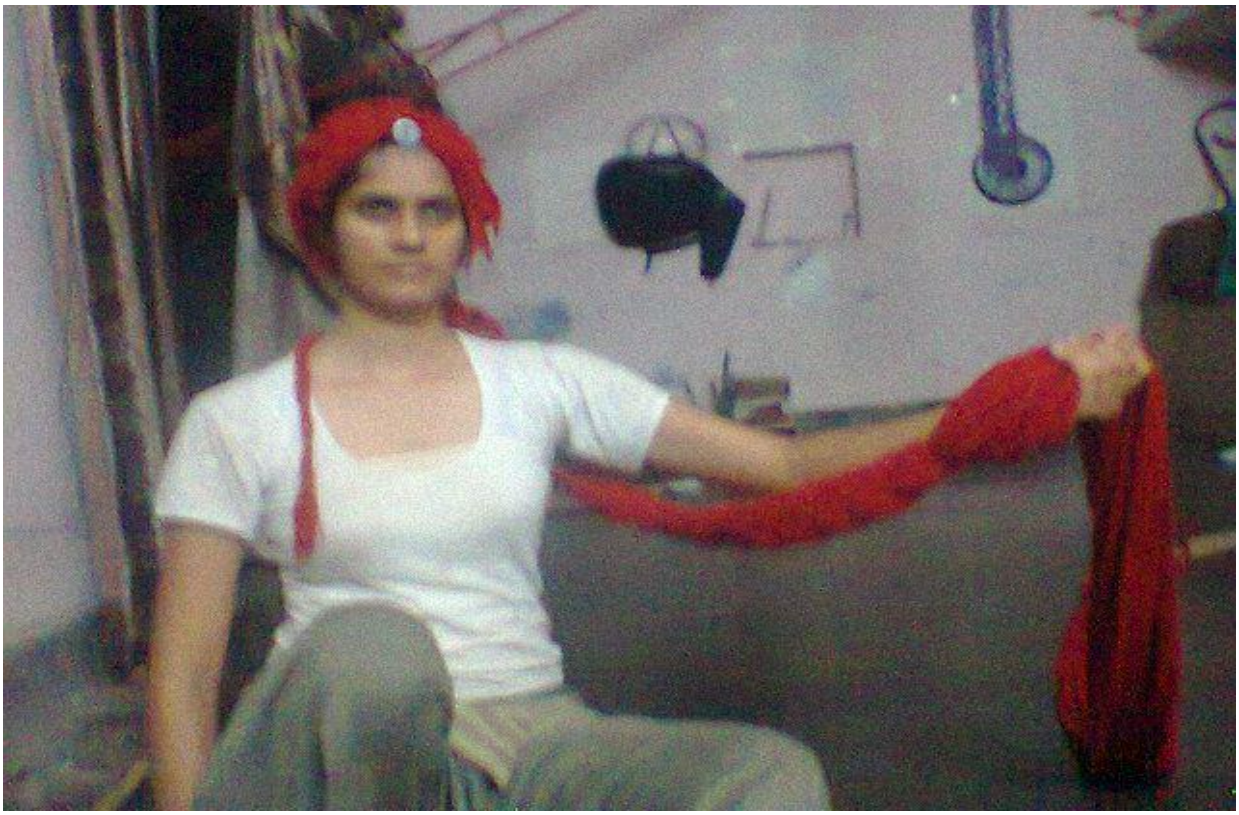

hindustantimes

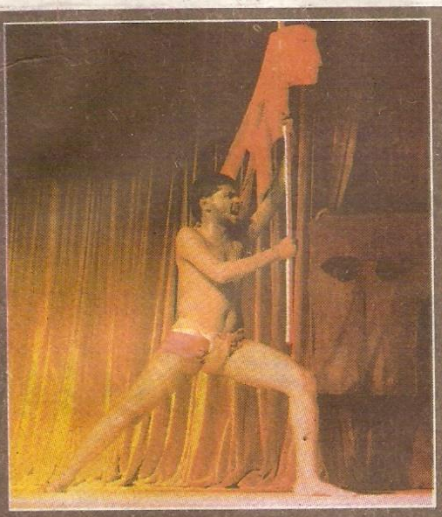

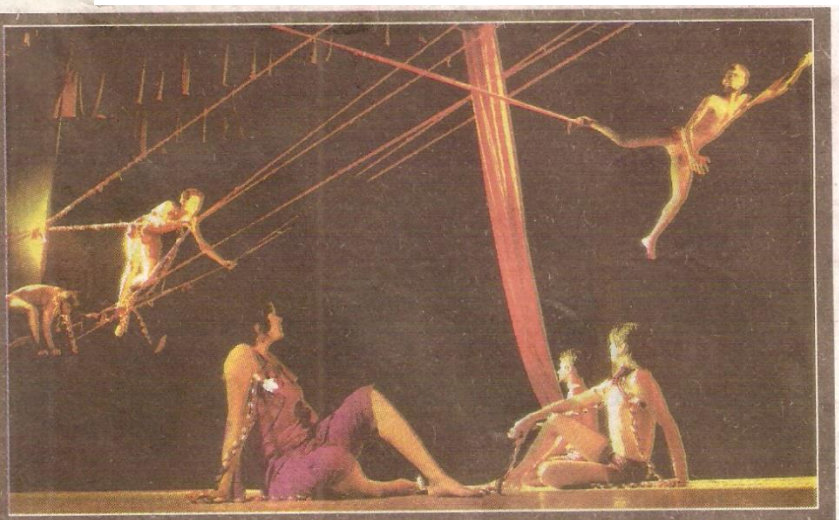

EXTRAVAGANZA

Theatre group 'Extra' organised a marvellous play 'Antaryatra' on the premises of North Central Zone Cultural Centre (NCZCC), with lots of enthusiasm.

On the-occasion, artistes mesmerised the audience with their powerful play. The play was directed by Rajkumar Rajak, while Samta Agarwal, Kaushik Poddar, Sayan Chakravarti, Vinod Saroj, Sandeep Yadav, Siddharth Pal among others played key roles in making the play a success. HT CITY

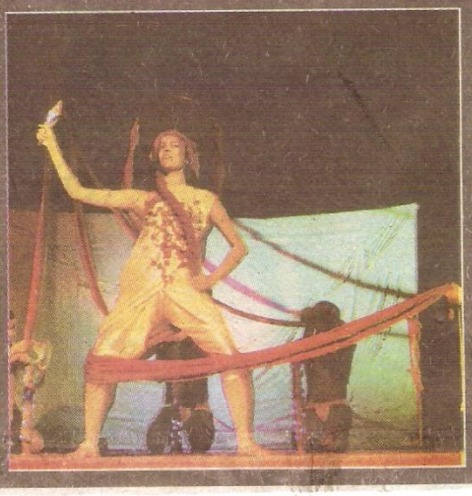

Snapshots of the play

antaryatra
Credits –
Light Design Rajkumar Rajak
Make up N Costume Rajendra Panchal
Play Ambience Arvind Jodha, Anjali Shekhawat
Set Design Rajkumar Rajak
Production Management Raina Raha
Photo N Video Anurag Anant, Dishari Raha
Technical support Veerbhan, Arijit Sen
Poster Design Swetaketu Majumder
Method Application Advisor Mr. Shantanu Bose
Play wright Aeschylus, Shakespeare, Dr. Dharmaveer Bharati
Poems N paintings Rabindranath Tagore
Music Director Sayan Chakrabarty
Assistant Music Director Swetaketu Majumder
Song Writer Shiv Kumar Saroj
Design Rajkumar Rajak
with gratitude
Inlaks Foundation, Ajeet Bahadur, Anupam Anand
Krishna Shrivastava, Abhinay Bhardwaj, Govind Bhardwaj
Sunil Acharya, Suresh Acharya, Ashish Purohit.

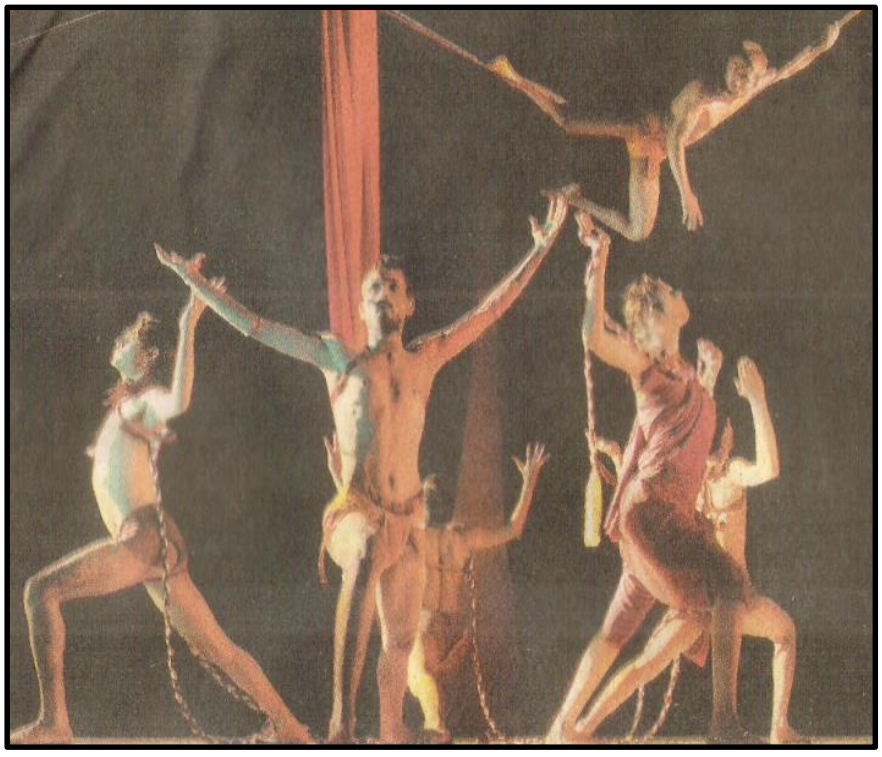

माह दिसम्बर 2015 : विद्यालय में रंगमंच कार्यशाला

माह दिसम्बर 2015 में संस्था द्वारा सनराइज़ पब्लिक स्कूल साहिबाबाद, गाजियाबाद-उत्तर प्रदेश में दिनांक 01/12/1205 से 07/12/12015 तक रंगमंचीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य थीम 'मल्टीपल इंटेलिजेंस एवं पियर सेन्सटाईजेशन' रहा है। इस कार्यशाला को संस्था के सदस्य नटराज हसरत द्वारा फेसिलिटेट किया गया।

विद्यालय के लगभग 26 छात्रों ने इस कार्यशाला में निरंतर भागीदारी की एवं ऐसी कार्यशाला को पुनः आयोजन करने का अनुरोध भी मिला । विद्यालयों में होने वाली ड्रामा प्रकृति पर कार्यों के लिए संस्था आगामी वर्ष से इसको अपने क्रियान्वयन तिथि पत्रक में स्थान देगी। नीचे दिये गए यू टुब लिक पर इस कार्यशाला के अंशों को देखा जा सकता है।

https://www.youtube.com/watch?v=VaShU-pqGjA&feature=em-upload_owner

सनराइज़ पब्लिक स्कूल –साहिबाबाद, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश

प्रमाण पत्र

माह फरवरी 2016 : विद्यालय में रंगमंच कार्यशाला

राजकीय पूर्व प्राथमिक विद्यालय मुट्ठिगंज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में दिनांक 2 फरवरी, 2016 को संस्था द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य थीम पास –पड़ोस को स्वच्छ रखना एवं पानी का व्यवस्थित उपयोग। इस एक दिवसीय कार्यशाला में विद्यालय में उपस्थित सभी कक्षाओं के छात्र – छात्राओं ने हिस्सा लिया। नीचे दिये गए यू ट्युब लिक पर इस कार्यशाला के अंशों को देखा जा सकता है।

https://www.youtube.com/watch?v=dsU0jofiWV4&feature=emupload_owner

राजकीय पूर्व प्राथमिक विद्यालय मुट्ठिगंज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

<u>प्रमाण पत्र</u>

एक्शन प्लान: 2016-17

वर्ष : 2016-17 –उद्देश्य

वर्ष 2016-17 में संस्था कला अनुसंधान एवं रंग शैक्षणिक संस्थान के रूप में अपनी बुनियाद बनाने के लिए विमर्शों को आरंभ करेगी। इस दिशा में संस्था जिन क्रियान्वयनों को स्थापित करेगी वह निम्न हैं:

- 360° रंग संवाद (नाट्य उत्सव एवं संगोष्ठी) का दो चरणों में आयोजन
- तीन प्रस्तुति परक कार्यशाला
- संस्था के सदस्यों की क्षमता वर्धन कार्यशाला एवं प्रशिक्षण
- संगीत नाटक अकादमी द्वारा सहयोग प्रदान 'क़िस्सा –ए-वजूद' मीर सूफी परियोजना का योजना अनुसार क्रियान्वयन एवं इसका विस्तार करना तथा मीर पारंपरिक कहानियों पर नाट्य निर्माण।
- इलाहाबाद रंग इतिहास एवं परिदृश्य पर शोध आरंभ करना
- संस्था द्वारा गढ़े जा रहे अभिनय प्रक्रिया 'सिबोलिक इंट्रेक्शन' पर दस्तावेज़ प्रसारित करना
- संस्था द्वारा दो लघु शोध छात्रवृति की घोषणा करने हेतु । संदर्भ संस्थानों से इसके लिए अनुभव अर्जन करना एवम निर्णय बनाना ।

अप्रैल – जून : 2016

नाट्य उत्सव एवं संगोष्ठी का आयोजन : 360° रंग संवाद

सन् 2003 के पश्चात संस्था इस वर्ष से '360° रंग संवाद' नाट्य उत्सव एवं संगोष्ठी का तत्वावधानिक आयोजन करना आरंभ कर रही है। इस नाट्य उत्सव एवं संगोष्ठियों का आधारिक उद्देश्यों में है कि 'समाज और कला तथा रंग कला के आपसी रिश्तों एवं अन्तः क्रियाएं क्या हैं को समूहिक रूप से विमर्श में लाना, सामाजिक विकास में कला की प्रक्रियात्मक भूमिका के नित नए उपयोगों एवं प्रयोगों को मंच देना एवं साझा संस्कृति की दिशा में अग्रसार होना।
इस वर्ष यह उत्सव एवं संगोष्ठी राजस्थान के बीकानेर जिले के टाउन हाल से आरंभ होगी। इस चरण के लिए संस्था ने बीकानेर की संस्था जन जागृति सांस्कृतिक मंच के साथ तत्वावधानिक प्रयास कर रहा है।

आयोजन तिथि : 1 – 4 अप्रैल , 2016
स्थान: टाउन हाल
प्रस्तुतियाँ : हल्लो ! मिस्टर परसाई (बीकानेर), नीली नैया (इलाहाबाद), दशानन (जयपुर), रुद्ध शोइशब (कोलकाता)
संगोष्ठी : समसामयिक रंग अभिनय शैलियाँ एवं अभिनेता, सांस्कृतिक साझेदारी और रंग अभिनेता, वर्तमान रंगमंच-अभिनय एवं अभिनेता संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ (खुला सत्र)
दस्तावेजीकरण : अप्रैल एवं मई
360° रंग संवाद के दूसरे चरण की तैयारी हेतु परियोजनाओं को संदर्भ सहायक संस्थानों से साझा करना : जून

अगस्त – सितंबर -2016

प्रस्तुति परक नाट्य निर्माण कार्यशाला

संस्था के कलकर्मियों के साथ इस कार्यशाला का आयोजन होना तय हुआ है । इस कार्यशाला में मिर सूफी पारंपरिक कहानी 'शशि पुन्नु' के विषयवस्तु पर नाट्य निर्माण किया जाना है ।
निर्माणिक तिथि : 3 अगस्त से 28 सितंबर-2016
स्थान: इलाहाबाद
प्रथम प्रस्तुति : उत्तर मध्य क्षेत्र संस्कृति केंद्र, इलाहाबाद , जवाहर कला केंद्र, जयपुर (प्रस्तावित)
प्रक्रिया का दस्तावेजीकरण : ओक्टोबर

नवंबर –दिसम्बर -2016

❖ **संस्था द्वारा कार्य किए जा रहे 'सिबोलिक इंट्रेक्शन' पर नाट्य प्रस्तुति को दर्शकों से साझा करना ।**

नाटक: आई एंड मी

नाट्य निर्माण तिथि : 3 नवंबर – 28 दिसम्बर -2016

प्रक्रिया दस्तावेज़ : 15 जनवरी -2017 तक

प्रथम प्रस्तुति : संस्था के स्वयं के स्टुडियो प्रेक्षागृह में - इलाहाबाद

❖ **360° रंग संवाद (नाट्य उत्सव एवं संगोष्ठी) के दूसरे चरण का आयोजन**

आयोजन तिथि : 6 – 10 जनवरी -2017

स्थान : इलाहाबाद

प्रस्तुतियाँ एवं संगोष्ठी का मुद्दा : माह जून -2016 में तय किया जाना है

20 जनवरी – 24 फरवरी – 2017

❖ **संस्था का अधिकत्तम अन्य दो संस्थाओं के साथ तत्वावधानिक नाट्य निर्माण कार्यशाला एवं प्रस्तुति**

स्थान : इलाहाबाद

आयोजन तिथि : माह जून -2016 में तय किया जाना है ।

❖ **संस्था का वार्षिक बैठक एवम वार्षिक प्रगति तथा समीक्षा दस्तावेजीकरण**

दिनांक: 26 फरवरी -2017

स्थान : इलाहाबाद

❖ **मीर सूफी समुदाय में मीर परंपरा पर सामूहिक संवाद एवं बीकानेर के टाउन हाल में मीर सम्मेलन**

दिनांक : 18 – 23 मार्च -2017

आयोजन का स्थान : मीर सूफियों का ग्राम –पूगल , बीकानेर एवं टाउन हाल बीकानेर –राजस्थान

❖ **संस्था सदस्यों का 'नव रस' पर प्रशिक्षण एवं अभ्यास**

❖ **संस्था सदस्यों का सामाजिक मनोविज्ञान पर क्षमता वर्धन कार्यशाला**

संस्था में वेतनिक कलाकर्मी

संस्था में वर्ष 2015-16 हेतु वेतनिक कलाकर्मी निम्न रहे हैं:

❖ अजीत बहादुर (गुरु एवं निर्देशक)

❖ अरविद जोधा (कलाकर्मी)

❖ अंजलि शेखावत (कलाकर्मी)

❖ अरिजित सेन (कलाकर्मी)

❖ रायना राहा रजक (कलाकर्मी)

❖ चौथमल सैनी (कलाकर्मी)

Report Sharing By:
Ex-tra An Organization
C/O Ajeet Bahadur, 950/625 Mutthiganj,
Allahabad, Uttar Pradesh-211003
E-mail: extraanorganization@yahoo.com
Mo: +91 9695907532/8127254051/9452401478